प्रकाशक—

वैद्य देवीशरण गर्ग
धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

—×—

मुद्रक—

श्री धन्वन्तरि प्रेस
विजयगढ़।

दो शब्द

अखिलेश्वर की असीम अनुकम्पा से यह निमोनिया प्रकाश प्रकाश में आरहा है। वैद्यक साहित्य मे ऐसी उपयोगी रचनायें अधिकाधिक आवश्यक हे। अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी गई कतिपय पंक्तियां भी समय पर प्रचुर सहायता देती है। आशा है कि यह प्रयास भी वैद्यवरों को उपयोगी होगा।

इसके लेखक--आयुर्वेद मन्त्री पंडित देवकरणजी वाजपेयी, वैद्य-संसार मे सुपरिचित हैं। आपके प्रपितामह, पितामह और चाचाजी सुयोग्य चिकित्सक थे और मातामह श्री पं० अधारी लाल जी मिश्र कन्नौज तो नयपाल के राजवैद्य रहे। पंडित देवकरणजी ने भी सर्वश्री स्वर्गीय पं० कन्हैयालाल जी वाजपेयी शास्त्री पं० रामआधारजी त्रिपाठी वैद्यशास्त्री, पं०रामचन्द्रजी मिश्र वैद्यशास्त्री और आयुर्वेदाचार्य पं० वेणीमाधव जी शास्त्री व्याकरणाचार्य के चरणों मे आयुर्वेदाध्ययन किया और वैद्यशास्त्री की परीक्षा मे रजतपदक लेकर उत्तीर्ण हुये।

तदुपरांत त्रिवेणी भंडार के आयुर्वेद कुटीर में प्रधान वैद्य के पद पर रहे और कुछ समय में ही स्वकीय श्रीगोपाल दातव्य औषधालय उत्तरीपुरा (कानपुर) में खोल दिया जो बड़ी सफलतापूर्वक लोक-सेवा कर रहा है। जगद्गुरु प्रतिवादि भयङ्कर पूज्यपाद श्री० १००८ स्वामी बालाप्रसाद जी मिश्र के चरणों में आपने विशेष ज्ञान प्राप्त किया और वनस्पत्यनुभव आपके सम्मान्य श्वसुर श्री० पं० देवी-प्रसाद जी अवस्थी तहसीलदार से यथेष्ट मिलता रहा है। यही कारण है कि आपकी रचनायें उपयुक्त और सारगर्भित होती हैं।

सर्व प्रथम करांची वैद्य सम्मेलन में आपने 'अर्श' पर निबन्ध भेजा, उस पर प्रथम श्रेणी का प्रशंसापत्र, रजतपदक और वैद्यराज पद प्रदान किया गया। फिर पंचम पंचनद सम्मेलन में हिस्टेरिया पर प्रबन्ध भेजा। वहां से भी प्रथम प्रशंसापत्र प्राप्त हुआ। षष्टम सम्मेलन जलंधर में राजयक्ष्मा पर आपकी विस्तृत रचना प्रथम श्रेणी में प्रशंसित और रजतपदक विभूषित की गई और उससे पूर्व १९३२ में बीकानेर सम्मेलन में भेजा हुआ यह "न्यूमोनिया-प्रकाश" भी रजतपदक पुरस्कार प्रथम श्रेणी में प्रशंसित हुआ जो आपके कर कमलों में अर्पित है। आप महानुभावों ने इसे प्रेम-पूर्वक अपनाकर उत्साह बढ़ाया तो श्री० पंडित जी की अन्यान्य रच-नायें भी शीघ्र प्रकाशित होकर सेवा में पहुचेंगी।

न्यूमोनियां एक भीषण दशा है इसमें संदेह नहीं, पर योग्य चिकित्सा से यह रोग असाध्य नहीं है। आजकल प्रतिष्ठित पाश्चात्य पद्धति में भिन्न २ कारणों और लक्षणों के पीछे दौड़ते हुए इसके अनेक नाम रूप कर लिए गए हैं जिनका कुछ उल्लेख यहां

कर देना उचित होगा। 'डिप्लोकोक्कसन्यूमोनाई' रोगाणु से होने वाला न्यूमोनियां लोबर न्यू० (Lobar) क्रूपस न्यू० (CroupusP) फाइब्रिनस न्यू०(Fibrinous P.) या ऐक्यूट न्यू० (Acute P.) है और भारत मे यही अधिक होता है। यदि फुफ्फुस के एक खण्ड से दूसरे खण्ड मे रोग चलता फिरे तो उसे माइग्रेटरी न्यू० (P. Migrans) कहते है। वृद्धावस्था मे तन्तु निर्बल और रक्त संचार दूपित होजाने से यह रोग होने पर हाइपोस्टेटिक न्यू० (Hypo-static Pneumonia) कहलाता है। यदि दोनों ओर के फैफड़े आक्रांत हो जावे तो उसे डबल (Double) न्यूमोनियां कहते है।

जिस दशा में श्वास नलिकायें bronchii अधिक आक्रांत हों उसे ब्रोंकोनिमोनिया (broncho-pneumonia) कहते है। थोड़े बहुत भेद से इसी को लोब्यूलर न्यू (Lobuler P.) कटारल Catarrhal P.) ब्रोंकियल न्यू० (bronchial P.) डेग्लूटीशनन्यू० (Deglutition P.) इन्ड्यूरेटिव न्यू. (Indurative P.) इन्सुलर न्यू० (Insuler P.) ट्यूब्यूलर (Tubuler P.) अथवा वैसीक्यूलर Vesiculer-न्यूमोनियां आदि अनेक नाम कहे जाते है। यही यदि विकारी (Septic) वस्तु सूंघने से उत्पन्न हो तो सैप्टिक (Septic) न्यूमोनियां कहते है।

जिसमे पीप अधिक हो वह प्यूरुलेट न्यू० (Purulent P.) और जिसमें प्रलाप मोह आदि दिमागी विकार अधिक हों वह सैरिब्रल (cerebral) न्यूमोनिया कहा जाता है। शुरू से

अन्त तक फेफड़े मे तेज़ रक्तसञ्चय रहे तो ऐबोर्टिव न्यू० (Abortive P.) और जहां पहिले फेफड़े का भीतरी भाग सूजे, पीछे बाहरी, वह सैंट्रल (Cantral) निमोनिया माना जाता है, इसमे जब तक सूजन अन्दर ही रहती है, तब तक विशेप कोई लक्षण प्रगट ही नहीं होता।

रक्तवाहिनियों मे रुकावट होने से एंबोलिक न्यू० (Embolic P.) कहते है, फुफ्फुस अवरण के शोथ (पार्श्वशूल) के बाद प्लूरोजैनिक (Pleuro genic) न्यूमोनिया होता है। इस प्लूरा के निकटवर्ती ऊपरी भाग मे शोथ हो तो–सुपरफिशियल न्यू० (Superficial P.) कहलाता है। केवल फुफ्फुस शिखर (चोटी Apex) ही सूजी हो तो एपिकल न्यू० (Apical P.) कहते है–और फुफ्फुस के संयोजक तंतु सूजकर परस्पर बाधा और विकार उपस्थित करे तो–इन्टरस्टिशियल न्यू० (Interstitial P.) फाइब्रोइड न्यू० (Fibroid P.) क्रौनिक (Chronic) निमोनिया या फुफ्फुस-शोष (Cirrhosis of the lung सिर्होसिस औफ दी लङ्ग) कहते है।

श्वास नलिकाओं के किनारे २ की सेले ही मुरझा जावें तो डिस्कामेटिव (Desquamative) निमोनिया होता है। इसमे बहुत चिकटा, लालायुक्त कफ निकलता है। यदि वायु कोषो के साथ साथ तमाम फुफ्फुस खण्ड श्लेष्मा स भर जाय तो मैसिव न्यू० (Massive p.) कहा जाता है। जिसमे मंथर ज्वर (Typhoid) टाइफाइड) के लक्षण प्रबल हों उसे 'टाइफोइड निमोनिया' कहते है।

दो निमोनिया वहुत कृच्छ साध्य होते हैं:-एक-शराबियों का (एल्कोहोलिक alcoholic) जिसमे वहुत प्रलाप होता है, और दूसरा-उपदंश रोगियों का सिफलिटिक (Sypnilitic) या श्वेत white ह्वाइट) जिसमें फुफ्फुस अंदर सफेद पाया जाता है। माता पिता के दोष से शिशुओं को यह अधिक होता है। इन दो-एक भेदों के सिवा सब दशाऐं, योग्य वैद्य, भगवान की कृपा और कुशलता से सम्यक् रूपेण आराम कर सकते हैं। ये सब मोटे तौर से, दशा भेदानुसार उन्हीं स्वरूपों में आजाती हैं जो आगे के पृष्ठों मे पाइयेगा। इतने नाम भेद इस लिये कहे गये हैं जिससे रोग फुफ्फुस के अंश मे-किस दशा मे है इसका ठीक-ठीक निर्देश कर सकें। चिकित्सा मे प्रायः एकाध खण्ड का (Lobar) न्यूमोनिया और वायुनलिकाओं का (Lobular) ब्रांकोन्यूमोनिया ये दो ही प्रधान भेद ध्यान मे रखने होते है। साथ ही चाहे भेद का ठीक ठीक नाम निश्चित हो या न हो इन समस्त भेदों में पीड़ा दाह और शोथ की न्यूनाधिकता के अनुसार वात, पित्त और कफ की हीन, मध्य, प्रवृद्धता का अन्दाज करके चिकित्सा कर सकते हैं। पंडित जी ने इस पर अधिकतर अनुभव सिद्ध चिकित्सा अङ्कित की है। वह, आपके द्वारा, आर्त्त बन्धुओं का कष्टमोचन करे-यही परमेश्वर से प्रार्थना है।

विनीति—

विजयगढ़
श्रावणी पूर्णिमा
१९९२. वि०

गणपतिचन्द्र केला
सम्पादक धन्वन्तरि।

सं० ४ ॥ जयति धन्वन्तरिः ॥

निखिल भारत वर्षीय—

१३ तम वैद्य सम्मेलनम्

वीकानेर नगरम् ।

प्रमाण पत्रम्

अयं श्री. देवकरण वाजपेयी वैद्यशास्त्री साहित्यरत्न उत्तरीपुरा कानपुर वास्तव्य, चरकादि महर्षिजन समुद् बृन्हितस्य प्रसिद्धतमाऽयुर्वेद शास्त्रस्य महताश्रमेण निखिल-विज्ञानावगाहन सौभाग्यमुपास्य सर्वाऽनुमोदितैः तत्रत्य सिद्धांतैः निमोनियां विषये परम सुन्दरं गवेषणात्मकं लेखं लिखितवान् रजतपदकं च प्राप्तवान् तत्कृतेऽस्य विदुषो महतीमववोधक्षमतां सबहुमानं प्रख्यापयति प्रमाणपत्रमेतत् ।
वितरण तिथिः—२० दिसम्बर सन् १९२२

मौहर सम्मेलन

सम्मेलनाऽध्यक्षः
डा० ए० लक्ष्मीपति B. A.
M. B. L. C. H.

महामन्त्रीः
जीवनराम हर्ष
आयुर्वेद भूषण

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

न्यूमोनिया प्रकाश

"यत्प्रभा पटलोद्भासि, भासतेद्यापि भारतीम्।
आयुर्वेदात्मकं ज्योतिः शाश्वतं नः प्रकाशताम ॥"

× × ×

अनेक भाषाओं के नाम-

संस्कृत मे—फुफ्फुस ज्वर, कर्कोटक सन्निपात, श्वसनक ज्वर और फुफ्फुस प्रदाह कहते हैं।

हिन्दीमे-फुफ्फुस प्रदाह, फुफ्फुस सन्निपात और निमोनियां कहते हैं।

अंग्रेजी में-न्यूमोनियां Pneumonia कहते हैं।

फारसी में-ज़ातुरिया कहते हैं।

शरीर और निमोनिया

शरीर और उसकी रचना, उसके प्रथक २ अवयव और उनकी बनावट, धर्मज्ञान निदानादि के प्रथम प्रत्येक वैद्य को इसका जानना परम आवश्यकीय है। परन्तु इस स्वल्प स्थान में शरीर की अति सूक्ष्म दृष्टि से व्याख्या करना एक बृहत् ग्रन्थ को निमंत्रण देना है। अस्तु ! इस स्थान पर निमोनियां से सम्बन्ध रखने वाले सम्पूर्ण अङ्गों की विवेचना न करके केवल उस अङ्ग का ही दिग्दर्शन करा देना चाहते है, जिससे निमोनियां का घनिष्ट और सर्व प्रथम सम्बन्ध होता है।

फुफ्फुस (फेफड़े लङ्गस)

प्राणिनांयकृत लीहौ शोणितात् प्रभवौ मतौ ।
शोणितात् प्रभवं फेन तस्माज्जातोहि फुफ्फुसः ॥१॥
यस्तु शोणितजः किट्टस्तस्मात क्लोम प्रजायते ।
मेदा शोणित सम्भूत कोष्ठे चान्त्रं प्रजायते ॥२॥

(पाराशरि संहितायां)

अर्थात्--रुधिर के फेन से फुफ्फुस बनता है, यह छाती के दोनों ओर दो होते है। ये रुधिर को पतला कर बहाते है। जैसा लिखा है किः

"हृदयाद्वामतोऽधश्च फुफ्फुसो रक्तफेनजः"

अर्थात्-हृदय से बांई ओर नीचे को, रक्त के फेन से उत्पन्न होने वाला "फेफड़ा" होता है।

सूक्ष्म विचार–

फुफ्फुस के अनेक छोटे २ अंश होते है जो परस्पर मे सौत्रिक तन्तुओं द्वारा जुड़े रहते हैं। प्रत्येक अंश को एक सूक्ष्म परिमाण का फुफ्फुस समझना चाहिये, इसीसे वायु नलिका लगी रहती है। यह नलिका असंख्य कोठरियों से संबन्ध रखती है, जिन्हे वायु-कोष्ठ या वायु मन्दिर कहते हैं, इनकी दीवारें सेलों से बनी होती है। फुफ्फुस के प्रत्येक अंश मे रक्त और लसीका की सूक्ष्म नलियां, केशिकायें और वात–सूत्र रहते है।

यह सव सूक्ष्म वायु प्रणाली, वायु मन्दिर, रक्त और लसीका की नलियां और केशिकाये तथा वात सूत्र परस्पर मे सौत्रिक तन्तु की सहायता से इकट्ठी रहती है। ऐसे २ हजार खंडिकाओं के आपस मे मिले रहने से फुफ्फुस बनता है यह स्पंज की आकृति का और उसी के समान मृदु होता है। (दाहिना और बांया) इस प्रकार फुफ्फुस दो होते है और छाती के खोल में रहते है। इन्हीं दोनों के बीच हृदय (दिल या हार्ट) रहना है, दोनों फेफड़ों का वज़न सेर सवा–सेर होता है तथा रंग [नीला] भूरा होता है।

फुफ्फुस के वायु मन्दिर की रचना—

जैसे बड़े २ मकानों मे छोटी २ अनेक कोठरियां होती हैं, वैसे ही इस वायु मन्दिर मे भी है और उन्हे वायुकोष कहते हैं। इसका आकार शहतूत से बहुत कुछ मिलता है। शहतूत को उसके

ऊपर के दानों और टेटीं समेत खोखला कल्पना किया जाने पर वायु मन्दिर का स्वरूप समझने विलम्ब नहीं लगता।

अर्थात्–शहतूत की खोखली टेटी मानो सूक्ष्मवायु प्रणाली (नलिका) हुई और खोखला शहतूत वायु मन्दिर। उस खोखले के दाने अन्यान्य सूक्ष्म वायुकोष्ठ हुये। एक सूक्ष्म वायु-प्रणाली के द्वारा वायु बहुधा एक से अधिक मन्दिरों मे जाया करती है।

शवच्छेदकों का अनुमान है कि दोनों फुफ्फुसों मे वायु मन्दिरों की संख्या १६ से १८ करोड़ के लगभग होती है। यदि इन कोठरियों को खोलकर इनकी दीवारे पृथ्वी पर बिछादी जा सके तो इनका क्षेत्रफल १३० से १५० वर्ग गज होगा और इसी हिसाब से ३६ फुफ्फुसों की कोष्ठ दीवारों का क्षेत्रफल १ एकड़ होगा।

वायु कोष्ठ--

वायुकोष्ठ अर्द्ध गोलाकार होते है। इनकी दीवारे पतली और चपटी सेलों से बनी होती है, सेलों के बाहर की तरफ पीले स्थिति स्थापक सौत्रिक तंतु की एक पतली तह रहती हैं और इस तह मे रक्त केशिका का जाल फैला रहता है। केशिका के रक्त और कोष्ठों की वायु के बीच में, केवल केशिका नली और वायु कोष्ठ की पतली दीवारें होती है।

श्वास कर्म--

वायु का फेफड़ों के भीतर जाना और फिर बाहर निकलना श्वास कर्म कहलाता है। यह २ प्रकार का है।

१–उच्छ्वास या अन्तःश्वसन।   २–प्रश्वास या वहिश्वसन।

१–उच्छ्वास या अन्तःश्वसन–एक वार श्वास नासिका में होकर फुफ्फुसों के भीतर प्रवेश करती है। इसके कारण छाती फैलकर पहिले से बड़ी होजाती है। इसे उच्छ्वास कर्म कहते हैं।

२–प्रश्वास या वहिःश्वसन–फिर वायु नासिका से बाहर निकलती है, छाती भी पूर्व दशा को प्राप्त होती है। फुपफुस सिकुड़ कर छोटे हो जाते हैं। इसे प्रश्वास कर्म कहते है।

इस प्रकार एक उच्छ्वास और एक प्रश्वास से एक बार का श्वास कर्म पूर्णता को प्राप्त होता है। और प्रौढ़ मनुष्य १ मिनट में १६ से २० बार तक श्वास लेता है। बाल्यकाल मे यह संख्या अधिक होती है, नवजात शिशु प्रति मिनट मे ४४ बार तक और ५ वर्ष की आयु मे २५–२६ बार श्वास लेता है।

फुफ्फुसों द्वारा रक्त की शुद्धि––

शरीर में सेलों के टूटने-फूटने और भांति २ की रसायनिक क्रियाओं के होने से कार्बोनिक एसिड गैस (C0) नामक विषाक्त पदार्थ बनता रहता है, इसका स्वभाव ज़हरीला है। जिस रक्त में इसका परिमाण अधिक होता है, उसका रङ्ग स्याही मायल होता है वह नीला काला रक्त शरीर के सब भागों से इकट्ठा होकर हृदय के दाहिने ग्राहक कोष्ठ मे दो महाशिराओं द्वारा पहुंचता है। वहां से फुफ्फुसीया धमनी द्वारा वह दोनों फुफ्फुसों मे जाता है और उन केशिकाओं मे पहुंचता है जो वायु-कोष्ठों की दीवारों में रहती हैं।

इस स्थल में इस रक्त से कार्बोनिक एसिड गैस (वायु) बाहर निकलती है, और उसकी जगह [वायु में से] आक्सीजन गैस आ जाती है यह सब क्रिया फुफ्फुसों में उच्छ्वास और प्रश्वास द्वारा होती ही रहती है। इससे रक्त शुद्ध होता रहता है। ऐसा शुद्ध रक्त [फुफ्फुसीय सिरा द्वारा] हृदय के वाम भाग मे जाकर सारे शरीर का पालन करता है।

इस प्रकार हमारे प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्गों का रक्त से ही पालन पोषण होता है और इसी कारण से वायु [प्राण] जीवन के लिये बहुत ज़रूरी है। तथा अशुद्ध वायु शरीर के लिये बहुत ही हानि कारक है क्योंकि इसमे विष का अधिक अंश तथा मास के लोथड़े और अनेक तरह के कीटाणु आदि २ मिले रहते है जो वायु द्वारा शरीर में पहुंचकर रक्त को दूषित कर दिया करते है।

इसका अधिक विस्तार न लिख कर अब रोग निदान और उपचार पर आते है।

रोगी के कर्त्तव्य-

(१) रोगी को वैद्य का पूर्ण आज्ञाकारी होना।

(२) पथ्य का पूर्णतया पालन करना और अपथ्य से कोसों दूर रहना।

(३) छल-छिद्र, दम्भ, कपट, मिथ्या भाषणादि से सर्वदा बचना।

(४) ब्रह्मचर्य व्रत को नियमानुसार पालन करना।

(५) प्रकृति के नियमों के विरुद्ध न चलना।

निमोनिया में वैद्य ध्यान रखें-

१- श्लेष्मा में लाली होती है। यदि इसकी लाली वढ़ जावे तो कष्ट-साध्य है।

२—श्वास-नाड़ी की विकृति।

३—मूत्र की अवस्था।

४—रक्त में श्वेताणुओं की वृद्धि।

५—निमोनियां एक फुफ्फुस (सिंगल) में अथवा दोनों फुफ्फुसों मे (डवल) है। दोनों फुफ्फुसों का भयानक होता है।

आयुर्वेदीय निदान में निमोनिया—

निमोनिया कोई साधारण रोग नहीं है, यह अत्यन्त कष्ट-दायक और भयानक रोगों मे से है। वर्तमान में इसे संक्रामक और वहु व्यापक कहा जाता है।

आजकल प्रचलित आयुर्वेदिक ग्रन्थों में किसी जगह भी इसका इस नाम से स्वतन्त्र वर्णन नहीं पाया जाता। हां! प्राचीन रक्तष्ठीवी, उरुक्षत, क्षतजकास, पार्श्वशूल, अभिन्यास, कर्कटक ज्वर आदि २ रोगों के कुछ २ लक्षण इसमें अवश्य पाये जाते है।

चरकोक्त कफोल्वण मध्यवात हीनपित्त को ही तन्त्रान्तरों ने 'कर्कोटक' सन्निपात माना है और इस ही के विशेष लक्षण "निमोनिया" रोग मे पाये जाते हैं तथा भावमिश्र जी ने भी कर्कोटक-सन्निपात ऐसा ही माना है।

रक्तष्ठीवी, पार्श्वशूल अभिन्यास आदि २ के केवल दो ४ (चार) लक्षण ही इस रोग मे ,पाये जाते है, विशेप नहीं। जैसे रक्तष्ठीवी सन्निपात से इसके बहुत से लक्षण मिलते है। किसी २ ने निमोनिया को राजयक्ष्मा या सिल लिखा है। यह उन्होंने कफ के साथ खून आने की वहज से लिखा है। राजयक्ष्मा या सिल मे इसके से लक्षण वहुत दिनों मे होते है, परन्तु निमोनिया में सब लक्षण चटपट होते है और—

रक्तष्ठीवी मे–मुख से थूक के साथ खून आता है, निमोनिया से भी खून आता है। रक्तष्ठीवी मे ज्वर, प्यास, वेहोशी, दर्द, श्वास, वगैरह लक्षण होते है, ये निमोनिया मे भी होते है। रक्त-ष्ठीवी मे नेत्र लाल होते है, निमोनिया मे भो नेत्र लाल होते है। रक्तष्ठीवी मे जीभ काली हो जाती है, निमोनिया मे–नीली हो जाती है। (यह कोई भेद नहीं है) रक्त-ष्ठीवी मे अतिसार और खून के चकत्ते होना वेशक अधिक लिखा है।

परन्तु प्रायः निमोनियां के लक्षण कर्कोटक सन्निपात और वैदारिक सन्निपात से मिलते है और विशेषतः विद्वानों की भी इसी निदान विशेष की सम्मति है, जिसका वर्णन आगे किया जायेगा। पहिले यहां पर कुछ डाक्टरी मत का भी दिग्दर्शन करा देना आवश्यकीय है।

न्यूमोनिया पर डाक्टरी मत–

डाक्टरी मे निमोनिया के ५ भेद लिखे है—

१–निमोनिया ।

२–ब्रङ्कोनिमोनिया या लोब्यूलर निमोनिया ।

३–पुराना इन्टरस्टिशिपल निमोनिया ।

४–फुफ्फुस की गैंग्रिन ।

५–फुफ्फुस मे कैन्सर (नासूर) ।

अब इनके लक्षण लिखते है—

१–(साधारण) निमोनिया PNEUMONIA

इस रोग मे फुफ्फुस के दाहिने बाये बहुत जलन होती है और नीचे की ओर दर्द होता है। इस निमोनिया के पैदा होने के पहिले ज्वर आता है, कम्प होता है, और खांसी चलती है। बहुत दिन पहिले भूख कम हो जाती है। कमजोरी हो आती है। हाथ, पैर और छाती मे दर्द होता है। श्वास जोर से चलता है नाड़ी तेज हो जाती है, जीभ और होठ नीले हो जाते है एवं धीरे धीरे इस रोग से रोगी की चैतन्यता का नाश होकर मृत्यु होजाती है।

यह रोग ६ से ८ दिन तक बहुत कष्ट देता है, खांसी और श्वास मे भयानक कष्ट होता है। उठ कर बैठने मे या जोर से श्वास लेने मे खांसी आती और उसके साथ खून आता है। जब रोगी की मृत्यु होने का खतरा होता है, तब उपरोक्त लक्षण या तो कम हो जाते है या बिल्कुल ही नहीं रहते ।

इस रोग में पहिले बलगम पतला २ आता है, पीछे दो एक दिन मे खूब गाढ़ा आने लगता है। कभी कभी २-१ घण्टे मे ही

आटे की तरह आने लगता है, कफ मे कुछ सुर्खी सी मिली रहती है यानी कुछ खून का अंश रहता है रोगी का ज्वर ही बढ़ता जाता है। पहिले दिन ताप १०२° से १०४° डिग्री तक और तीसरे दिन १०७° से १०६° डिग्री तक देखा जाता है। १०६° डिग्री का ताप होने पर रोगी का बचना कठिन हो जाता है नाड़ी की चाल यद्यपि सर्वत्र समान नहीं होती, फिर भी तीसरे चौथे दिन १०२ से १०३ तक हो जाती है। सिर मे बड़ी वेदना होती है, नींद नहीं आती बेचैनी बढ़ जाती है, पेशाब के साथ भी खून की झलक आती और उसके साथ धातु भी मिली रहती है। इसे फुफ्फुस का प्रदाह भी कहते है।

२--लोब्यूलर या ब्रांको निमोनिया--

(Lobular or Broncho Pneumonia)

इसके, सब लक्षण निमोनिया के से ही होते हैं। अन्तर केवल इतना ही है, कि साधारण निमोनिया की तरह इसमे कम्प आदि लक्षण नहीं होते। ताप १०३ से १०५ डिग्री तक रहता है, कभी २ ज्वर बढ़ जाता है, नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है।

३-पुराना या इन्टरस्टिशियल निमोनिया-

(Chronic or Interstitial Pneumonia)

प्रथम का लिखा हुआ निमोनिया जब पुराना हो जाता है, तब पसली मे एक ओर खिंचाव सा होता है, श्वास और खांसी

बढ़ जाते हैं, कफ बड़ी कठिनता से निकलता है और उसमें बहुत ज्यादा दुर्गन्ध होती है। तब यह रूप समझा जाता है।

४—गलित निमोनिया—

(Gangrenous pneumonia)

पुराना निमोनिया होकर, जहरीले कीड़ों के जहर से, खूनके जहर से अथवा उपदंश से भी यह रोग हो जाता है। इसमे फुफ्फुस मे बड़ी तकलीफ होती है।

५—फुफ्फुस में कैन्सर वाला निमोनिया—

(Cancrus pneumonia)

यह रोग बहुत कम देखने मे आता है। इसे कोई संक्रामक या छुतहा कहते है, और वंशपरम्परा से होने वाला बताते है। इसमें—श्वास, खांसी, तीर छेदने की वेदना, दबाने से तकलीफ बढ़ना, खांसी के साथ कफ निकलना ये लक्षण होते हैं। कभी कभी फुफ्फुस से खून भी आता है, बुखार रहता है, रात मे पसीना आता है, और रोगी कमजोर हो जाता है।

तात्पर्य

असल में निमोनिया, सन्निपात ज्वर की एक अवस्था का नाम है, सन्निपात ज्वर के साधारण लक्षण के सिवाय और भी कई विशेष लक्षण होते है। निमोनिया होने के पहिले एक दम से कमजोरी आजाती है और क्षुधा नाश हो जाती है। जब निमोनिया

होता है तब पहिले जाड़े का बुखार आता है, सर में दर्द होता है कय होती है, रोगी आयं वायं बकना है और पैर पटकता है। जब रोग बढ़कर पूर्ण रूप से प्रगट होता है, तब छाती के छूते ही दर्द होने लगता है, श्वास लेने मे कष्ट होना है, खांसी का बड़ा जोर रहता है, मैला और गाढ़ा तथा लसदार कफ निकलता है। यदि यह कफ बर्तन में रख दिया जाय तो कफ साधारणत छुटता नहीं है, कभी २ उस कफ के साथ जरा २ खून भी आता है।

जब एक सप्ताह बीत जाता है तब पेशाब और पसीना बहुत आता है। नाड़ी की चाल हर मिनट मे ९० से १२० बार तक हो जाती है। शरीर का उत्ताप थर्मामिटर मे १०३° से १०४° डिग्री तक हो जाता है। कोई २ तो १०७° डिग्री टेम्परेचर होजाने पर भी आराम होते देखे गये है।

रोगी का मुख मण्डल मलीन और चिन्ता युक्त होना गाल-लाल और काला होना तथा फटना। जीभ-सूखी और मैली क्षुधा मन्द, आहार मे कष्ट, दस्त होना, अनिद्रा, उजियाला देखने से कष्ट बोध, पीड़ा-प्रकाश के दूसरे-तीसरे दिन मुख मण्डल पर छोटी २ फुंसियां होना, और फुफ्फुस का दूषित होना इस रोग का प्रधान लक्षण है।

अन्य मत से फुफ्फुस प्रदाह-

इसकी प्रथमावस्था मे फेफड़े मे रक्त-सञ्चय होकर शाति पूर्वक ज्वर होता है। शरीर का उत्ताप १०३ डिग्री तक, किसी २ को

अधिक भी होता है। श्वास प्रश्वास की गति प्रति मिनट में ३०-३५ और नाड़ी स्पन्दन संख्या १२०-१३० वार तक होती है। प्रथम ज्वर आरम्भ होकर थोड़ी२ खांसी होती है, फिर गाढ़ा २ कफ रक्त मिला हुआ निकलने लगता है। इस रोग मे "वक्षपरीक्षक यन्त्र" द्वारा फुफ्फुस की परीक्षा अवश्य करनी चाहिये। उसे इंग्लिश मे स्टेथस्कोप Stethoscope कहते है। इस (स्टेथस्कोप) से परीक्षा की विधि का वर्णन आगे परीक्षण पद्धति में करेंगे।

इस रोग में पहिले फुफ्फुस मे शोथ होती है, फिर यह कड़े पड़ जाते हैं, उसके वाद सड़ने लगते हैं। इसमे शीत ज्वर, छाती ज्यादा गरम, मुंह और आंख लाल, सिर में दर्द, प्यास, जीभ मैली, क्षुधानाश, छातीमें मीठा२ दर्द, सूखी खांसी, कभी कफ अधिक व व्याधि बढ़ने पर कफ मे कुछ खून भी आने लगता है, श्वास मे कष्ट, ल्हेसदार दुर्गन्ध युक्त, ये लक्षण होते हे।

सरदी लगना, व ऋतु वदलना, अति परिश्रम, अति मैथुन, ज्वर मे शीत वस्तु खाना, कई भांति के ज्वर मे कुपथ्य सेवन आदि कारणों से यह होता है। इसके अनेक लक्षण व मत है।

आयुर्वेदीय मत

निमोनिया की उत्पत्ति के 'विप्रकृष्ट' कारण

समाच्छादन हीनानां, दुर्बलानां विशेषतः।
दीनानां दून चित्तानां शीत वर्षादि बाधनाद् ॥१॥

अभिघातात् क्वचित प्रतिगन्ध योगेन कुत्रचित् ।
क्वचिद्वा व्याधिनाऽनेन पीडितस्याऽति सङ्गमात ॥ २ ॥
सर्वेष्वेवतुपु प्रायोवर्पासु शिशिरे मधौ ।
विशेपेण प्रजायेत ज्वरो जीवाणु सम्भव. ॥ ३ ॥

अर्थात्–आचार्य मोद्गल्य का कथन है कि–

१–नङ्ग शरीर रहना । २–विशेप दुर्बलता ।

३–शोकार्त । ४–शीत वर्पा से बाधित ।

५–फुफ्फुस पर किसी प्रकार की चोट लगना ।

६–दुर्गन्धियुक्त वायु का सेवन ।

७–सहवास अथवा किसी व्याधि से पीड़ित अधिक सहवास से वीर्यपात इत्यादि कारणों द्वारा ही वर्पा शिशिर और वसन्त ऋतुओं मे—प्रकुपित श्वसनक ज्वर हो जाता है ।

८–कई तरह का ज्वर । ९–अधिक परिश्रम करना ।

१०–धूल कचरा आदि दूपित पदार्थों का श्वास के साथ फेफड़ो मे जाना । ११–अति स्त्री प्रसङ्ग करना ।

१२–मौसम का बदलना या ऋतु परिवर्तन होना ।

१३–जीवन निर्वाह की कठिनता । १४–रात्रि जागरण ।

१५–दरिद्रता १६–वंशानुक्रमागत रोग पूर्ण शरीर ।

१७–मद्य का अत्यन्त उपयोग करना ।

१८–वक्षस्थल मे आघात लगने से भी यह रोग होता है । आघात जन्य निमोनिया को (ट्रोमेटिक Traumatio

निमोनिया) कहते है। और स्वयं ही होने वाले निमोनिया को (डियोपैथिक निमोनिया) कहते है, इस तरह निमोनिया के प्रधान २ भेद अंग्रेजी में माने गये है।

उत्पन्न होने की अवस्था—

यह रोग अधिकतर शीतकाल में ही बालक, वृद्ध, युवा, सब को होता है किंतु प्रथम १० वर्ष की अवस्था तक तथा २० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्था में अधिक होता है।

वैज्ञानिकों का मत—

वैज्ञानिक लोग इस रोग की उत्पत्ति कीटाणु विशेष से मानते हैं जो फेफड़ों में अपना घर बना कर रहते है और वहीं वृद्धि को प्राप्त होते हैं। निमोनिया रोगोत्पादक विष-जन्तुओं को अंग्रेजी मे (डिप्लोकोक्कस न्यूमोनियाई) कहते हैं।

तात्पर्य—

निमोनिया का हेतु प्रतिश्याय ही होता है। पहिले सर्दी ही लगती है। सर्दी लगने पर कुपथ्य करने से सर्दी बिगड़ कर ज्वरादि उपद्रव हो, छाती मे दर्द व खांसी होने लगती है; जैसे— सर्दी लगने पर कफकारक द्रव्य सेवन करना, नहाना, ठण्डी हवा लगना, ओस मे रहना, भीगे कपड़े बदन पर रखना, सर्द जमीन पर सोना, नङ्गे बदन रहना, दही मट्ठा अधिक खाना, फल खाकर जल पीना, शर्वत वगैरह: पीना, ऊख चूसना, खिया तुरई की तर-

कारी खाना, अथवा जुकाम होने के साथ अदरक, चाय, काफी गरम मसाला, प्याज़, लहसुन, हल्दी फांकना, सर्दी को हटाने के लिये गर्म वस्तुओं का अधिक सेवन करना—इत्यादि र कारणों से नाक से पतला पानी जैसा कफ गिरता हुआ तुरन्त सूख जाता है। जिससे अर्द्धावभेद मस्तिष्क शोथ, शिरोग्रह वगैरह: उपद्रव उठ आते है जिनका आराम करना कठिन हो जाता है।

तथा गोबर मिट्टी से घर द्वार लीपने से बहुत देर तक ठंडे पानी मे रहने से (क्यों कि बहुत स्त्रियों को सर्दी लगने पर भी दिवाली जैसे त्यौहार पर लीपने पोतने की धुन सवार हो जाती है। अक्सर ऐसी स्त्रियों का निमोनियां होते देखा गया है) ज्यादा देर तक सर्दी होने पर शीत क्रिया करते रहने से सर्दी बढ़ कर फुफ्फुस मे कफ का संचय होजाता है।

इन हेतुओं से कफ संचय होकर निमोनिया हो जाता है इसी लिये इन कुपथ्यों से बचना चाहिये, पथ्य पालन करना ही सबसे श्रेष्ठ चिकित्सा है।

सन्निकृष्ट कारण—

१–किसी दुर्गन्धित व उत्तेजक, गैस के हठात् फेफड़ों मे प्रवेश करने से।

२–छाती मे चोट लगने से।

३–वर्षा मे खूब भीगने से।

४–गरम शरीर मे एक दम सर्दी लग जाने से।

५–फेफड़ों से रक्त निकलने से।

६–रोगजन्तुओं के संचित होने से।

७–फेफड़ों में अधिक समय तक रक्त का जमाव होने। एवं–

८–रोग नाशनी शक्ति के नष्ट हो जाने से–शीघ्र निमोनिया रोग हो जाता है। जिन मनुष्यों को विप्रकृष्ट कारणों द्वारा रोगोत्पादक क्षेत्र बना दिया गया है उनको यह रोग शीघ्र ही उत्पन्न होकर काल कवल कर डालता है। कभी २ रोगों की प्रबल अवस्था में उपद्रव रूप से भी निमोनिया होता देखा गया है।

निमोनिया का पूर्वरूप

पार्श्वार्तिः श्वास कासौ च क्वचित कम्पोऽवसन्नता।
ज्वरे श्वसनके प्रायः पूर्व रूपमिदं मतम्॥ १ ॥

अर्थात्–पार्श्व शूल, श्वास, कास, कम्प तथा मनोदेहावसाद, इन लक्षणों द्वारा निमोनिया ज्वर का पूर्व रूप ज्ञात होता है।

तात्पर्य–उदासी; अग्निमांद्य, कमजोरी, कब्ज, अङ्गमर्द, जी मचलाना, पखवाड़ों मे दर्द, छाती पर भार सा मालूम होना, खांसी, श्वास, कम्प, ज्वर, तन्द्रा, शिर दर्द, वमन, सर्दी आदि निमोनिया के पूर्व रूप है।

संप्राप्ति

संहत्या स्रड् मूलतः फुफ्फुसस्या
ऽसव्ये पार्श्वे सव्यतो वा द्वयोर्वा।

हृन्युर्दोषा श्वासयंत्रं विपोत्थाः।

कृद्धाम्स्मान्ह्वासकष्टं ज्वरश्च ॥ ५ ॥

अर्थात्–संचित रक्त दक्षिण अथवा वाम पार्श्व दोषों करके कुपित फुफ्फुस-विष सम्भूत होकर कष्टवत श्वास और ज्वर को प्रगट करता है।

तात्पर्य–सन्निकृष्ट और विप्रकृष्ट कारणों से तीनों दोष कुपित होकर फेफड़ों में आये हुए रस और रक्त को दूषित कर देते है। जिससे रक्त और रस केशिकाओं और वायु कोषों में अवरुद्ध होकर घन होने लगते है, इससे फेफड़े भारी होने लगते है और कुछ ही समय के बाद उनमें पीप (पूय) उत्पन्न होजाती है। इस प्रकार दोष फेफड़ों को नष्ट कर डालने की चेष्टा करते हैं।

पुराने रोगियों को इस रोग का आरम्भ पिछले भाग से होता है, परन्तु नवीन रोगियों में रोग का आरम्भ दाहिने फेफड़े के नीचे भाग से होता है। कभी २ बायें फेफड़े के ऊपरी भाग से भी आरम्भ होता देखा गया है। तथा कई रोगियों के दोनों फुफ्फुस एक समय में भी रोग ग्रस्त देखने में आते हैं।

सामान्य रूपम्-

लाक्षा रसाभं यः ष्ठीवेद् रक्त श्वास ज्वरार्दित-

स्त्यान फुफ्फुस मूलस्य तस्य श्वसनको ज्वरः ॥ १ ॥

अर्थात्–लाखके रस के सदृश कफ मिश्रित रक्त मुख-द्वार से निकले, श्वास और ज्वर का वेग हो। ये सम्पूर्ण उपद्रव प्रायः

फुफ्फुस ही से उत्पन्न होते है। इसी से कोई २ आयुर्वेदाचार्य इस ज्वर को श्वसनक ज्वर निर्णय कर चुके है।

तात्पर्य–पहिले फेफड़ों मे सूजन आजाती है और वे कडे होजाते है तथा सड़ने लगते है। आरम्भ मे जाड़े का बुखार आता है, छाती बहुत गर्म होजाती है, मुंह और नेत्र लाल हो जाते है, सिर मे दर्द होता है, प्यास बहुत लगती है, जीभ मैली रहती है, क्षुधा नाश, छाती में मन्दा-मन्दा दर्द होता है। खांसी सूखी चलती है, कभी २ कफ भी आता है, बीमारी के बढ़ जाने पर मुख से खून गिरने लगता है, श्वास कष्ट से आता है, थूक ल्हेसदार, चिपचिपा और बदबूदार होता है।

लक्षण और आयुर्वेद का मत

इस सान्निपातिक व्याधि-विशेष को आयुर्वेद मे "कर्कोटक सन्निपात" करके लिखा है। यह हीन पित्त, मध्य वात, कफाधिक्य से होता है। यथाः—

मध्य हीन प्रवृद्धैस्तु वात पित्त कफैस्त्रयः।
तेन रोगास्त एवोक्ता यथा दोष बलाश्रयाः ॥ १ ॥

अन्तर्दाहो विशेषोऽत्र न च वक्तुं स शक्यते।
रक्तमालक्तकेनैव लक्ष्यते मुखमंडलम् ॥ २ ॥

पित्तेनाकर्षितः श्लेष्मा हृदयान्न प्रसिच्यते।
इषुणेवा हतं पार्श्व तुद्यते खन्यते हृदि ॥ ३ ॥

प्रमीलकः श्वास हिक्का वर्द्धन्ते च दिने दिने।
जिह्वा दग्धा खरस्पर्शा गलः शूकैरिवावृतः ॥४॥

विसर्ग नाभिजानाति कूजेच्चापि कपोतवत ।
अतीव श्लेष्मणा पूर्ण. शुष्क वक्त्रोष्ठ तालुकः ॥५

तन्द्रा निद्रातियोगार्तो हतवाग्निहतद्युतिः ।
न रति लभते नित्य विपरीतानि चेच्छति ॥६॥

आयस्यतेच बहुशो रक्तं ष्ठीवति चाल्पश. ।
एव कर्कटको नाम्ना सन्निपात सुदारुण. ॥७॥
(मा० नि० श्लोक ७६ से ८२ तक)

अर्थात्—मध्यवात, हीनपित्त, अधिक कफ के सन्निपात मे तत्तद् दोपों के बलानुसार, कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं। तथा–विशेष करके–शरीर के भीतर जलन, बोलने मे असमर्थता, मुख मंडल जैसे लाल (पतङ्ग से) रङ्ग दिया हो (मुख और गाल लाल हों)। पित्त से खींचा हुआ कफ हृदय से बाहर नहीं निकले, पसलियो में तीर के वेधन सरीखी पीड़ा हो, छाती और हृदय मे खोदने जैसी पीड़ा हो।

आंख बन्द, पलक भारी, श्वास, खांसी, हिचकियों का होना यानी प्रति दिन इनका बढ़ना जिह्वा दग्ध रूखी सूखी मैली गाय की जिह्वा की तरह, मानो जीभ मे थूक नाम मात्र को भी नहीं है अर्थात सूखी जान पड़ती है, तथा कालापन लिये श्वेत होना, कण्ठ मे कांटे से हो जांय, मानो किसी ने धान का भूसा भर दिया हो।

बेहोशी मे मल मूत्र चारपाई पर होजाय, कफ की आवाज़ ज्ञात हो, कबूतर की आवाज़ की भांति घुटरे, मुख, होठ, तालू सूख जांय, होंठ पर पपड़ी पड़ जाय, तन्द्रा निन्द्रा (मोह) अधिक हो। वाणी और कान्ति नष्ट हो जाय। बेचैनी हो विपरीत पदार्थों की इच्छा हो। बारम्बार खासने मे किंचित् खून मिला कफ थूकना, कफ का ल्हेसदार तन्तुवत् होना—ये सब लक्षण "कर्कोटक सन्निपात" के है। इसी को डाक्टर लोग निमोनिया कहते हैं।

डाक्टरों ने दोषों की प्रधानता से अन्य सन्निपातों को भी निमोनिया के अन्तर्गत माना है। जैसे—हीन पित्त, मध्यकफ, वाताधिक्य वाला क्रकच सन्निपात' (ब्रौंको न्यूमोनिया) नाम से लिखा है उसको भी निमोनिया कहते है। अर्थात् यह भी निमोनिया की एक किस्म है (जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आये है) और हीनवात, मध्यपित्त, कफाधिक्य सन्निपात को भी निमोनिया ही मानते है जिसको आयुर्वेद मे "वैदारिक सन्निपात" करके लिखा है।

नोट—इस प्रकार निमोनिया के "डबल", "सिंगिल" और "ब्रौंको" आदि कई प्रकार के भेद है। आयुर्वेदरीत्यानुसार इसे ३ श्रेणी मे विभक्त करते है:—

१—मध्यवात, हीनपित्त, अधिक कफ, यानी कफप्रधान निमोनिया। अर्थात्—कर्कोटक सन्निपात।

२—अधिक वात, मध्य कफ, हीनपित्त, यानी वात प्रधान निमोनिया अर्थात्—"क्रचक सन्निपात"।

३–हीनवात, मध्यपित्त, कफाधिक्य वाला निमोनिया।
अर्थात्–"वैदारिक सन्निपात,,।

इनमें कर्कोटक सन्निपात का वर्णन हम अभी ऊपर कर आये है। शेष दो इस प्रकार हैं।

२--क्रकच सन्निपाता वाला निमोनिया

किसी किसी निमोनिया मे वायुदोष अधिक होता है उस में उपरोक्त निमोनिया (कर्कोटक सन्निपात) के लक्षणों के होने के सिवाय वायु की प्रधानता से नीचे लिखे हुए विशेष लक्षण भी पाये जांय तो उसे वातप्रधान निमोनिया समझना चाहिये। यथा.-

प्रवृद्ध हीन मध्यैस्तु वात पित्त कफैश्च यः।
ते न रोगास्त एत्रोक्ता यथा दोष बलाश्रयाः ॥१॥
प्रलापायास सम्मोहाः कम्प मूर्च्छाऽरति भ्रमाः।
मन्यास्तम्भेन मृत्युः स्यात्तत्राप्येतद्विशेषतः ॥२॥
भिषग्भिः सन्निपातोऽयंक्रकचः संप्रकीर्तितः ॥३॥

(माधव नि० श्लो० ७३, ७४, ७५,)

अर्थात्–अधिक वात, मध्य कफ, हीन पित्त सन्निपात मे तत्तद्दोषों के बलानुसार कम्प, दाह, भारीपन आदि लक्षण होते है तथा विशेष करके व्यर्थ बकना, परिश्रम बिना किये ही थकावट मालुम होना, मोह, कम्प, मूर्च्छा, बेचैनी, भ्रम, गरदन का जकड़ना आदि लक्षण होते है।

या यों समझिये कि "क्रकच" (वाताधिक्य) सन्निपात जिस के लक्षण अभी लिखे गये है निमोनिया (कर्कोटक सन्निपात) में मिल जाय, तो वाताधिक्य निमोनिया जानना चाहिये। इसकी चिकित्सा भी-वात को शान्त करते हुए निमोनिया की चिकित्सा करनी चाहिए। क्योंकि यह रोग नही "रोगशंकर" है। दोनों सन्निपात एक रोगी को एक साथ होजावें, तो रोग और मृत्यु में कोई भेद नहीं है। ऐसे ही कठिन रोग से व्याप्त रोगी को जो वैद्य उबारते है अर्थात् जीवन दान देते है वे ही तो वैद्य है। ऐसे २ स्थलों मे ही उन तीक्ष्ण बुद्धि विशारद वैद्यों की आयुर्वेद ने प्रशंसा की है।

अब इसका एक भेद और है उसका भी वर्णन करते हैं:-

३ वैदारिक सन्निपात वाला निमोनिया

यह हीन वात, मध्यपित्त, कफाधिक्य, वैदारिक सन्निपात नामक महा कठिन रोग है। इसके लक्षण मिलते हुए निमोनिया को प्राय असाध्य ही जानना चाहिए।

हीन मध्य प्रवृद्धैस्तु वात पित्त कफैश्चयः।
तेन रोगास्त एवोक्ता यथादोष बलाश्रयाः ॥१॥

अल्प शूलं कटी तोदो मध्ये दाहो रुजाभ्रमः।
भृशं क्लमः शिरोवस्ति मन्याहृदय वाग्रुजः। ॥२॥

प्रमीलकः कास श्वास हिक्का जाड्यं विसंज्ञता।
प्रथमोत्पन्नमेतंतु साधयन्ति कदाचन ॥३॥

एतस्मिन् संवृवृत्ते तु कर्णमूले सुदारुणः ।
पिडिका जायते जन्तोर्यया कृच्छ्रेण जीवति ॥ ४ ॥

स वैदारिक संज्ञोऽयं सन्निपातः सुदारुणः ।
त्रिरात्रात्परमेतस्य व्यर्थमौपधकल्पनम् ॥ ५ ॥
(मा० नि० श्लो० ८३,८४, ८५, ८६, ८७)

अर्थात्–हीनवात, मध्यपित्त, कफाधिक्य वैदारिक सन्निपात मे उन्हीं २ दोपों के बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते है । तथा विशेपकर यह लक्षण होते है:- जैसे–अल्पशूल, कमर मे तोड़ने सरीखी पीड़ा, छाती मे दाह और पीड़ा, भ्रांति, अत्यन्त ग्लानि, मस्तिष्क मे अत्यन्त पीड़ा, मूत्राशय (मसाना, ब्लाडर, पेड़ू) नाड़ी (मन्या, गरदन) हृदय और वाणी मे पीड़ा हो । आंखे मिंची जायं, श्वास, खांसी, हिचकी, जड़ता और अत्यन्त वेहोशी होती है।

इस सन्निपात के उत्पन्न होते ही यदि चिकित्सा न की जाय तो रोगी का बचना कठिन हो जाता है । आरम्भ मे इसकी उत्तम चिकित्सा करने से रोगी को दैववश आराम हो जाय तो भले ही हो जाय नहीं तो इसे असाध्य ही जानना चाहिये ।

यदि इस सन्निपात मे कर्ण मूल मे शोथ हो जाय तो विल्कुल ही असाध्य समझना, किम्वा ३ रात्रि के व्यतीत होने पर चिकित्सा भी निष्फल जानना चाहिये ।

शंका-समाधान

शङ्का—अब यहां पर कोई यह शङ्का करेंगे कि इन तीन—ऋचरु, कर्कोटक और वैदारिक सन्निपातो का प्रथक २ वर्णन आयुर्वेद मे किया है, इन तीनों की चिकित्सा का भी विशेष रूप से अलग २ वर्णन ग्रंथान्तरों मे पाया जाता है तो फिर आपने इन तीनों को एक निमोनिया मे क्यों घसीट डाला ?

समाधान--प्रिय वैद्य बन्धुओ ! इसका उत्तर इस प्रकार है कि आयुर्वेद मे तो प्रथक प्रथक निदान और चिकित्सा का वर्णन है परन्तु डाक्टर लोग इन तीनों के लक्षण एक साथ लिखते हुए तथा कुछ २ भेद करते हुए निमोनियां का ही भेद मानते है और इस प्रकार उनका मानना भी ठीक मालूम पड़ता है कारण कि ये तीनों कफोल्वण सन्निपात की अंशांश कल्पना के ही भेद मात्र हैं। इन तीनो सन्निपातों मे और तो कुछ विशेष भेद नही है, केवल दोपों का ही कम-बेश भेद मात्र है।

जिसको निमोनिया कहते है वह तो 'कर्कोटक सन्निपात' है ही, किन्तु जिसको हम लोग सन्निपात कहते हैं उसको डाक्टर लोग "टाइफाइडफीवर" कहते है। तथा 'टाइफाइड'(Typhoid) और निमोनिया (pneumonia) इन दोनों रोगो को अलग मानते हैं। 'टाइफाइड के वेसिलज और 'निमोनिया के कोक्कस, प्रथक प्रथक है ऐसा कहते है।

जो हो, उनकी पद्धति (Theory) कीटाणु लेकर है—और हमारी दोपों को लेकर है। परन्तु विचार करने से ज्ञात

होता है कि सन्निपात ज्वर का हेतु मिथ्या आहार, विहार आदि तो अवश्य ही है, परन्तु उत्कट विरुद्ध क्रिया करने से भी सन्निपात हो जाता है। ऐसे ज्वरों मे-आंत से सम्बन्ध रखने वाले ज्वरों को डाक्टर गण टाइफाइड (Typhoid) अर्थात् सन्निपात ज्वर कहते है। निमोनिया फुफ्फुस संबंधी ज्वर है इस लिये इसको टाइफाइड न कहकर निमोनिया (Pneumonia) कहते है।

दूसरी शंका-यह करेगे कि फुफ्फुसीय ज्वर (निमोनिया) को आयुर्वेद मे फुफ्फुस—ज्वर कहकर क्यों नहीं लिखा।

समाधान-प्रेमी वैद्यगणो ! यह स्थल विचारणीय है, कि आयुर्वेद मे फुफ्फुस ज्वर (निमोनिया) मस्तिष्क—ज्वर (Brain Fever)इत्यादि अंग विशेष के अनुसार ज्वरों के नाम नहीं लिखे किन्तु प्रकारान्तर से सब कुछ लिखा है। जैसे:—

मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषाह्यामाशयाश्रयाः।
वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यू रसानुगाः ॥ (माधवः)

अब ज़रा इस ज्वर की संप्राप्ति की ओर ध्यान देकर विचारे कि मिथ्या आहार और विहार के करने से कोष्ठस्थित अग्नि की ऊष्मा बाहर होकर ज्वर नाम धारण करती है। तो अब यहां यह समझना है कि कोष्ठ किसे कहते हं। वाग्भट्ट जी ने कहा है कि:—

"अन्नकोष्ठो महास्रोत आम पक्काशयाश्रयः।,, (इति वाग्भट्ट)
कोष्ठं पुनरुच्यते महास्रोतः शरीर मध्यं महानिम्नमाम पक्काशयश्चे ति पर्याय शब्दै.। (इति चरकः)

और भी देखिये:—

स्थानान्यामाग्निपक्कानां मूत्रस्य रुधिरस्य च।
हृदु ंडकः फुफ्फुसश्च कोष्ठ इत्यविधियते ॥१॥

आमाशय (Stomach स्टमक)
अग्न्याशय (Pancreas पैंक्रियस)
पक्काशय (Dudenum ड्योडीनम)
मूत्राशय (मूत्रपिंड और बस्ति Kidney & Bladder)
रक्ताशय (यकृत, प्लीहा Liver लिवर, Spleen स्प्लीन)
हृदय (Heart हार्ट)
उंडुक (पौटलाक रेक्टम Rectum के ऊपर)
—ये कोष्ठ है।

पुनश्च महर्षि अत्रिनन्दन कोष्ठ के विषय मे लिखते हैं कि—

"पञ्चदश कोष्ठाङ्गानि तद्यथा नाभिश्च हृदयश्च क्लोमं च यकृच्च प्लीहाच वृक्कौ च वस्तिश्च पुरीषाधानञ्चामाशयश्चेति पक्काशयश्चोत्तर गुदंचाधरगुदंच क्षुद्रान्त्रंच स्थूलांत्रञ्च वयावहनं चेति ॥

(शा० अ० ७)

इस १५ स्थानों का नाम कोष्ठ हुआ और इन १५ स्थानों मे अग्नि का निवास अर्थात् स्वाभाविक ऊष्मा (Heat) जो है वह रस मे मिल स्रोतों को रोक कर चर्म को उष्ण करती है तब ज्वर कहलाती है।

इन ऊष्मा (गर्मी) का नाप ही थर्मामीटर मे डिग्री कहलाता है। चर्म की स्वाभाविक गर्मी (Normal Temperature) थर्मामीटर मे ६८॥ डिग्री रहनी चाहिये।

किस्वा इस तरह समझें कि अभ्यंतर अङ्ग विशेष जिनको कोष्ठ में गिनती करा चुके है, उनकी स्वाभाविक ऊष्मा रस से आकर चर्म की ऊष्मा में मिल जाती है, तब चर्म की ऊष्मा (Temperature) अधिक हो जाती है। इसे ही ज्वर कहते है।

स्पष्टीकरण—

अब यहां विचार करें कि जो कोष्ठ जिस २ दोष की प्रधानता से निर्मित है, उसी २ के अनुसार, दोषानुकूल ज्वर के लक्षण होते है। इसलिये आयुर्वेद में पृथक २ अङ्ग विशेष का ज्वर नहीं लिखा है। जैसे—

यदि किसी को कफ ज्वर हुआ तो इसका सम्बन्ध कफाशय से अवश्य होगा, कफाशय से सम्बन्ध होने पर कफाशय-जैसे दोनों फुफ्फुस आमाशयादि कफ प्रधान स्थल निश्चय विकृत होंगे। उन स्थानों के विकृत होने से उन २ स्थानों के कार्य में अवश्य बाधा होगी अर्थात उन स्थानों के कार्य अवश्य विकृत रूप से होंगे। फुफ्फुस श्वास यन्त्र है, इसमें कफ ही की प्रधानता रहती है। इसमें का सञ्चय और प्रसार हो तो वह वायु कोष को आच्छादित व पूरित पर श्वास कष्ट बढ़ाता है कारण कि—

श्वास कोष में जब कफ भर जायगा तो वायु कहां रहेगी और रक्त को किस तरह से शुद्ध करेगी।

यही कारण है कि—निमोनिया में श्वास कष्ट अधिक हो जाता है, और श्वास की गति तीव्र किंतु ओछी हो जाती है, जिसके

कारण रक्त शुद्ध नहीं होने पाता। रक्त शुद्ध न होने के कारण अर्थात् रक्त को शुद्ध वायु (औक्सीजन–Oxygen) न मिलने के कारण आभ्यंतरिक दूपित वायु (कारबनगैस–Carbon Gas) वाहर न निकलने से, मुखमण्डल, ओष्ठ आदि नीले वर्ण के हो जाते है। जब दूपित वायु (Carbon Gas) आभ्यन्तर से वाहर न निकलने पावे और शुद्ध वायु भीतर न जा सके, तब ही तो प्राण वायु के ऊपर घोर सङ्कट होता है तभी रोगी वेचैन हो अपने प्राण त्यागता है, इसीलिये यह रोग भयङ्कर कहलाता है।

जब वायु–कोप मे कफ सञ्चय होने लगता है, तब चतुर चिकित्सक कफ के सञ्चय को हितोपचार से रोकते है। यदि अधिक सञ्चित हो गया हो तब प्रमाथि द्रव्यों से कफ को पतला कर वाहर निकालना चाहिये। इस प्रकार कफ ज्वर में श्वास का क्रम खराब देखे तो समझ जाय कि यह कफज्वर 'फुफ्फुस सम्बन्धी' (Pneumonic न्यूमोनिक) है तथा इस ज्वर मे वमन; अन्न न पचना, पेट भारी, क्षुधामन्द आमगन्धी, उद्‌गार आदि दूषित आमाशय के लक्षण मिले तो समझले कि 'यह ज्वर आमाशय सम्बन्धी' है। इसी प्रकार अन्य स्थानों को भी जान लेना चाहिये।

पित्त प्रधान कोष्ठ मे पित्त दूषित हो, उसके कार्य में वाधा पहुंचती है और वाधा के कारण पित्त के प्रधान लक्षण पीत-नेत्रता आदि प्रकट होते है। इसी तरह वायु कोप भी जानना।

निमोनिया मे त्रिदोष अंशांश भेद से अवश्य ही कुपित होते हैं। बुद्धिमान वैद्य को विचार करना चाहिये कि किस दोष

के लक्षण अधिक है, जिस दोष के लक्षण अधिक हों, उस दोष की प्रधानता समझ उस दोष के स्थान का विचार करना। जैसे-वायु का प्रधान स्थान "पुरीषान्त्र" है और अन्य स्थान भी गौण रूप से है वे गौण रूप के स्थान और उसमे व्याप्त वायु इस प्रकार है—

स्नायु केन्द्र-चेतनाधिष्ठान—

यह मतिष्क आवरण के ऊपर बिछा हुआ जाल के सदृश मांसरज्जु की पतली २, कुछ २ मोटी सूतली के समान डोरियों का केन्द्र है, जो कि पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) से बंधी हुई है, और समस्त शरीर मे फैली हुई बाह्याभ्यन्तर अवयवों को आकुञ्चन प्रसारण शक्ति द्वारा, चेतना देकर कार्य कराती है। समस्त शरीर मे फैली हुई इन स्नायु समूहों का नाम ही नाड़ी मण्डल है। जिसे अंग्रेजी मे "नरवस सिस्टम Nervous System", कहते है। इस स्नायु मण्डल द्वारा ही पञ्च ज्ञानेन्द्रिय और पञ्च कर्मेन्द्रियों के समस्त चेतनायुक्त व्यापार हुआ करते है।

इस स्नायुमण्डल की स्वाभाविक शक्ति इस प्रकार है : सङ्कोचन, प्रसारण,। स्फुरण, अवगुण्ठन, गति, वन्धन, कम्प, स्तब्ध आदि। जब यह स्नायु मण्डल अपने २ स्थान पर स्थित हुआ अनुकूल व्यापार करता है, तब शरीर को निरोग रखता है और इस स्नायुमण्डल के विकृत होने से समस्त शरीर का व्यापार प्रतिकूल होजाता है। जैसे अङ्ग-भङ्ग, भ्रंश, आक्षेप, तोद, शूल, कम्प, अवगुण्ठन, स्तब्ध तथा शब्द स्पर्श आदि शक्तियां बिगड़ जाती है।

प्राणवायु का निवास और कर्म

अथवा इस तरह स्पष्ट समझें, कि प्राणवायु छाती में रहती है। इसका मतलब यह है कि श्वासोच्छ्वास की गति उसी स्नायु मण्डल की आकुञ्चन, प्रसारण शक्ति द्वारा ही हुआ करती है। क्योंकि आकुञ्चन, प्रसारण शक्ति न होती तो लोहार की धोंकनी यन्त्र की तरह फुफ्फुस उठता, फूलता, बैठता सिकुड़ता कैसे ? और वायु कोप में वायु कौन भरता तथा उठने दबने का काम कौन करता ?

आक्सीजन (प्राणप्रद वायु) अन्दर कैसे पहुंचता और अन्दर का कारबनगैस (दूषित वायु) कैसे बाहर निकलता ? यह क्रिया ही मनुष्य मात्र को जीवन अवस्था में रखती है। फुफ्फुस को वायु का खजाना समझना चाहिये। वायु के कोप से कफ के संचित हो जाने से श्वासोच्छ्वास की गति बिगड़ जाती है। यही कारण है कि निमोनिया मे श्वास-चक्र बिगड़ जाता है और उस श्वास चक्र के बिगड़ने से बाहर की शुद्ध वायु पूर्ण रूप से अभ्यन्तर नहीं पहुंच सकती और अभ्यन्तर की सम्पूर्ण दूषित वायु बाहर नहीं निकल सकती, जिससे रोगी व्यग्र हो जाता है।

उदान वायु का निवास और कर्म

यह कंठ मे निवास करती है। छाती के ऊपर मस्तिष्क पर्यन्त जितनी क्रियायें होती है। जैसे–शब्द सुनना, वाक्य बोलना, रूप देखना, गंध लेना, षट् रस व्यंजनों का स्वाद लेना, वमन द्वारा

खाये हुये पदार्थ का बाहर निकलना, उद्गार (डकार) का होना इत्यादि क्रियायें उदान वायु के आधीन है ये भी उसी प्रकार स्नायु मंडल की आकुंचन प्रसारण शक्ति द्वारा ही सम्पादित होती रहती है।

समान वायुका निवास और कर्म—

यह वायु नाभि में रहती है और उसी स्नायु मंडल के आकुंचन प्रसारणकी शक्ति द्वारा ही पाचनादि क्रियाये करती रहती है।

अपान वायुका निवास और कर्म—

यह वायु गुदा में रहती है और उसी स्नायु मंडल द्वारा मल मूत्र, अधोवायु, रज, शुक्र, गर्भ इनका ग्रहण और त्याग किया करती है। अथवा यों समझिये कि स्नायु मंडल की शक्ति से आंते जलौकावत संकुचित और प्रसारित होकर मल का त्याग करती है। और उसी शक्ति के द्वारा अधोवायु भी जलतरंगवत् बाहर निकल जाती है। फिर भी उसी शक्ति द्वारा ही मूत्रपिंड (Kidneys) द्वारा मूत्राशय मे मूत्र संचित हो, वस्ति द्वारा बाहर निकल जाया करता है। उसी तरह वीर्य कोष से वीर्य बाहर होने के समय मूत्रमार्ग द्वारा बाहर निकला करता है। इसी तरह रज और गर्भ भी गर्भाशय से विसर्जन हुआ करता है।

व्यान वायु का निवास और कर्म—

यह समस्त शरीरस्थ चर्मेन्द्रिय से बंधन रखने वाली सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्नायु द्वारा आघात, प्रत्याघात, शीतोष्ण, सुख,

दु:खादि, चेष्टा का बोध करती है। जैसे अकस्मात् पैर में कांटा लगने से स्नायु मण्डल टेलीग्राफवत् कम्पित हो, अपने केन्द्र मस्तिष्क को शीघ्र सूचित कर दु:ख का बोध कराती है।

कहने का अभिप्राय यह है कि वायु कोप (फुफ्फुस) में प्रतिश्याय (सर्दी, जुकाम) होने के कारण कफ संचित हो जाता है, तब उस कफ का निकलना कठिन हो जाता है। फिर वह कफ फुफ्फुस में शोथ प्रदाह उत्पन्न करके उसे विकृत बना देता है, इसी से इस निमोनिया ज्वर को "फुफ्फुस ज्वर" कहते हैं। फुफ्फुस विकृत होजाता है। तब श्वास की गति क्रमविरुद्ध हो जाती है। श्वास की गति क्रमविरुद्ध होने से अन्यान्य स्थान जैसे-- पाकस्थली व अंत्र मण्डल का कार्य क्रमविरुद्ध हो जाता है। यही कारण है कि निमोनिया में किसी २ को अग्निमान्द्य व अतिसारादि उपद्रव हो जाते हैं जिससे बड़े २ चिकित्सकों को टाइफाइड का भ्रम हो जाता है।

टाइफाइड् ज्वर का सम्बन्ध अन्त्र मण्डल से है और निमोनिया का सम्बन्ध फुफ्फुस से है। इसीलिये सद्वैद्य को विचार करना चाहिये कि प्रथम-सर्दी, खांसी, सीने में दर्द और ज्वर हो तो इसे निमोनिया ज्वर समझे और अतिसारादि इसके उपद्रव समझना चाहिये।

यदि प्रथम ज्वर होने के साथ या ज्वर के पहिले से ही पेट बिगड़ अतिसारादि करे और उसके पीछे कफादिक का उपद्रव हो तो इसे टाइफाइड जाने। न्यूमोनिया में सर्दी, ज्वर, फेफड़े में

प्रदाह, दुर्बलता व शीतावस्था वहुत समय तक वनी रहती है, फेफड़ों के प्रदाह की अधिकता से श्वास प्रश्वासों की संख्या वढ़ कर १ मिनट मे ५०-६० वा इससे भी अधिक हो जाती है। श्वास कष्ट विशेष वढ़ जाता है, जिससे रोगी सो नहीं सकता और न किसी से साफ शब्दों मे अपने मानसिक भाव प्रगट कर सकता है। श्वास लेते समय नासापुट का उत्थान और निकलते समय शीघ्र पतन होता है। प्रश्वास मे निकली हुई वायु प्रायः ठण्डी होती है। कही २ नाड़ी की गति व श्वास प्रश्वासों मे अन्तर होता है, परन्तु यह वात सव रोगियों मे नही देखी जाती। कंठ कूजन, मुख और ओष्ठों का नीला होना, अरुचि, प्रलाप और वेचैनी आदि इस रोग के प्रधान कारण है।

इस रोग का अन्त दारुण मोक्ष से सप्तम, नवम, एकादश दिवस मे होता है। दारुण मोक्ष की अवस्था मे रोगी की दशा शोचनीय हो जाने के वाद कुछ ही समय पीछे शुभ लक्षण प्रकट होते है। १० या १२ घंटे मे शारीरिक ऊष्मा अपनी स्वाभाविक मात्रा मे आजाती है। उस समय पसीना और वेहोशी वहुत होती है, श्वास अधिक आता है, नाक से रक्त वा किसी २ रोगी को दस्त भी होते देखे गए है। इस अवस्था मे या तो अत्यन्त दुर्बलता वा हृदय की कमजोरी होकर रोगी का अन्त हो जाता है या वह हमेशा के लिये निरोग हो जाता है। यदि यह अवस्था न आये, तो रोगी को पुन: कोई अन्य रोग होने की सम्भावना वनी रहती है।

परीक्षण पद्धति—

ज्वर

ज्वर सर्वाङ्ग मे होता है और उसका उत्ताप अति शीघ्र होता है। आधुनिक ताप-मापक यंत्र द्वारा (थर्मामीटर) ज्वर की परीक्षा करने पर उसका संताप प्रायः १०२° से १०५° तक रहता है। हमने किसी किसी रोगी को १०७° से १०८° डिग्री तक वढ़ा हुआ ज्वर पाया है। किसी २ रोगी को ज्वर सदा वना ही रहता है और किसी २ को प्रातः नहीं रहता, तथा सभी रोगियों को मध्याह्न मे ज्वर वढ़ जाता है।

खांसी—

विशेष कष्ट दायक मालूम होती है और थोड़ा २ कफ निकलता है। खांसी के समय कांस्य पात्र वत शब्द होता है। खांसी के साथ यदि शीघ्र कफ आने लगे तो समझना चाहिये कि रोग नष्ट होने में देरी न होगी। परन्तु यदि कफ न आता हो वा सूखी खांसी हो तो समझना चाहिये कि रोग भयानक है।

कफ-झागदार नहीं होता, वह गाढ़ा गोंद के समान चिपचिपा होता है। रंग मे—लोह किट्ट के समान कुछ लाल व अनेक रंग का होता है। कफ मे रक्त, निमोनियां-रोगोत्पादक विष जन्तु (डिप्लोकोक्कस न्यूमोनाई) वसा, पूय एवं अनेक प्रकार के पदार्थ मिले रहते हैं। रोगी दुर्वलता के कारण कफ को नहीं निकाल सकता इसलिये वस्त्र डाल कर कफ खींचकर निकालना पड़ता है।

पार्श्व वेदना यानी फुफ्फुस परीक्षा-

पार्श्व वेदना ही इस रोग का मुख्य लक्षण है। यह वेदना दांये व बांये स्तन के पास होती है। एक पार्श्व मे रोग होने से एक तरफ और दोनों पार्श्व मे होने से दोनों तरफ होती है। कभी पीठ मे और कभी वक्षस्थल मे भी यह वेदना मालूम होती है।

निमोनिया में फुफ्फुस की ३ अवस्थाये होती है—

१-रक्तसचयावस्था। २-स्रावावस्था। ३-पूयोत्पत्ति अवस्था।

१-रक्त संचयावस्था:—इस अवस्था मे वायु कोषों एवं शुद्ध वायु नलिकाओं मे प्रदाह होने लगता है। फेफड़ों का रंग लाल हो जाता है और उसमे नीलिमा की लहरसी दिखाई देती है। तौल मे पहिले से बहुत बढ़ जाते है। उनको काटने से खंडों में खून और झाग मिली रस्सं निकलती है। यह अवस्था १ से ३ दिन तक रहती है।

२-स्रावावस्था-इस अवस्था मे फेफड़ों का रंग साफ गुलाबी दिखाई देता है। इसमे की धमनी और शिराओं में शोथ वा रक्त की अधिकता होने से स्राव होने लगता है। ये यकृत के समान कठिन हो जाते है, और यकृत के समान कठिन अंश वायु से शून्य होते है। इस अवस्था मे वायुकोष नष्ट हो जाते है, इस लिये वह दिखाई नहीं देते। फेफड़ों को काटने से उनमे कोमल दाने दिखाई देते है। यह अवस्था ३ से ७ दिन तक रहती है।

३-पूयोत्पत्ति अवस्था-इस अवस्था में फेफड़ों का रंग भूरा हो जाता है और वह यकृत के समान ही रहते है। इस दशा में पूय (पीप) बहुत होता है, इसलिये इसको पूयोत्पत्ति अवस्था कहते है। फेफड़ों को काटने से उनमे धूसर रंग का दुर्गन्धित पीप निकलता है और इनको जल मे डालने से ये डूब जाते हैं। कभी कभी फेफड़ों मे फोड़े और व्रण हो जाते है। कई रोगियों को इसी अवस्था मे जीर्ण फुफ्फुस प्रदाह वा राजयक्ष्मा हो जाती है। यह अवस्था ७ दिन से ३ सप्ताह तक रहती है।

नाड़ी परीक्षा-

नाड़ी की गति अनियमित होती है। रोग की वृद्धि वा न्यूनता होने पर उसमे अन्तर पड़ता रहता है। रोग की प्रथमावस्था में वह द्रुतगति युक्त होती है और रोग की वृद्धि के साथ वह द्रुतता और भी बढ़ती जाती है। साधारणतया १ मिनट मे इसकी गति संख्या ६० से १३० तक रहती है और कभी २ बढ़ कर १६० तक भी हो जाती है। ज्वर के मन्द होने पर वह मन्द हो जाती है, रोग के बीच मे यदि अकस्मात् नाड़ी मन्द हो जावे तथा स्वेद और प्रलाप बढ़ जावे तो प्राणों का संशय होजाता है।

श्वास परीक्षा-

श्वास लेने में अधिक कष्ट होता है। ज्यों २ रोग बढ़ता जाता है, त्यों २ विशेष लक्षण उत्पन्न होते जाते हैं। फिर पीछे से पीड़ा अल्प हो जाती है, किन्तु अवरुद्धता बढ़

जाती है। श्वास और नाड़ियों मे अन्तर आ जाता है । श्वास से नाड़ी चौगुनी की बजाय तिगुनी, दूनी ही रह जाती है । श्वास संख्या १ मिनट मे ३० से ७० तक हो जाती है ।

मुख परीक्षा–

मुख का वर्ण बिल्कुल लाल हो जाता है, और मुख पर सूखापन भी आ जाता है। सरसों सम पिडिकायें निकल आती है। वाणी वा कांति नष्ट हो जाती है, मस्तक पर स्वेद की चिपचिपाहट ज्ञात होती है। सर मे अधिक दर्द होता है ।

जिह्वा परीक्षा

जिह्वा दग्ध रूखी, सूखी, मैली, गाय की जिह्वा की तरह मानों जीभ मे थूक नाम मात्र को भी नहीं हो, यानी बिल्कुल सूखी जान पड़ती है, तथा रंग भूरा या कालापन लिये श्वेत होना और कंठ मे कांटे से हो जाते हैं।

नेत्र परीक्षा

तन्द्रा; निद्रा अधिक हो जाती है। नेत्र लाल हो जाते हैं, नेत्रों की पुतलियां फैल जाती है और रात्रि मे निद्रा नहीं आती।

मूत्र परीक्षा

मूत्र कम उतरता है, तथा पेशाब के साथ खून की झलक आती है और उसके साथ धातु भी मिली रहती है।

थर्मामेटर से परीक्षा

अभ्यन्तर अङ्ग विशेष जिनको कोष्ठ प्रकरण में वर्णन कर आये है उनकी स्वाभाविक ऊष्मा; रस मे आकर, चर्म की ऊष्मा मे मिल जाती है, तव चर्म की ऊष्मा अधिक हो जाती है, इसे ही ज्वर कहते है और यही ऊष्मा (गर्मी) थर्मामीटर में डिग्री कहलाती है। चर्म की स्वाभाविक गर्मी थर्मामीटर मे ९८॥° डिग्री रहनी चाहिये। इसकी कमी वेशी में शरीर (चर्म) की ऊष्मा अर्थात् ज्वर की कमीवेशी जानी जाती है।

स्टेथिस्कोप (STETHOSCOPE) द्वारा परीक्षा-

१-प्रथमावस्था-निमोनिया की प्रारंभिक दशा मे फुफ्फुस से कठिन शब्द सुनाई देता है, फिर वाल घिसने के सदृश आवाज़ आती है।

२-द्वितीयावस्था-निमोनियां की दूसरी दशा में जव फुफ्फुस कठिन हो जाता है, तव कोई शब्द सुनाई नहीं देता।

३ तृतीयावस्था-निमोनियां की तृतीयावस्था मे जव पीप पड़ जाती है तो टप् टप् शब्द सुनाई देने लगता है।

निमोनिया और टाइफाइड में पहिचान-

निमोनिया रोग के जानने का सबसे सरल उपाय यह भी है कि स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी एक बार श्वास लेने में चार बार फड़कती है। परन्तु—

निमोनिया में–स्वास की गति तेज होजाने के कारण नाड़ी १ स्वास मे ४ वार न फड़क कर २ या ३ वार ही फड़कती है।

टाइफाइड में–स्वास की गति तीव्र न होने के कारण एक श्वास मे नाड़ी चार वार से भी कुछ अधिक वार फड़कती है। किन्तु टाइफाइड ज्वर मे जब कफ की वृद्धि अधिक रूप से हो तो नाड़ी की गति निमोनियावत् होजाती है। तब यों परीक्षा करे–एक हाथ रोगी के पेट के ऊपर रक्खे और दूसरा हाथ रोगी की नाड़ी पर रक्खें। दोनों की संख्या को अलग २ लिख या ज़ुबानी हिसाब कर विचारे कि पेट १ वार फूलने (एक श्वास) मे नाड़ी कितनी वार फड़कती है। यदि श्वास की संख्या से नाड़ी की संख्या दुगनी या तिगुनी हो तो अवश्य ही निमोनिया रोग हुआ जानो।

यदि श्वास की संख्या से नाड़ी की संख्या चतुर्गुण या अधिक हो तो टाइफाइड समझे।

निमोनिया रोग का काल–

यदि निमोनिया ज्वर वाले का मल और वातादि दोष विरुद्ध हो, अग्नि नष्ट हो जाय और उपरोक्त सब लक्षण सम्पूर्ण रूप से प्रकट हो जांय तो असाध्य जानना। और यदि इसके विपरीत हों तो कष्ट-साध्य जानना। तथा–७-१०-११-१२-१४-१८-२२ और २४ वे दिन तक इस ज्वर से मुक्ति पाने की या मृत्यु होने की अवधि निर्दिष्ट है।

साध्यासाध्य लक्षण

एकतः फुफ्फुसे दुष्टे ज्वरे ऽतीव्रे स्थिते वले।
सम्यक् पादत्रये लब्धे मन्तव्या सुखसाध्यता ॥ १ ॥

अर्थात–रोगी का अच्छा होना अथवा न अच्छा होना हृदय के ऊपर निर्भर है। रोगी वलवान होवे, ज्वर का वेग भी मृदु होवे और एक फुफ्फुस दूषित हुआ हो; वैद्य, परिचारक, औषधि, ये चिकित्सा के तीनों पाद उपयुक्त होने से रोगी अच्छा हो सकता है।

तात्पर्य–इस ज्वर मे यदि क्रमशः ज्वर और वातादि त्रिदोष की लघुता, इन्द्रिय समूहों की प्रसन्नता, सुनिद्रा, हृदय परिष्कार, उदर और शरीर की लघुता, मन की स्थिरता और, लाभ, प्रभृति लक्षण प्रकट हों तथा उपरोक्त अवधि पूर्ण होजाय तो उस रोगी को आराम हो जाता है।

कष्ट-साध्य लक्षण

स्वेदोभ्रंश ज्वरस्तीव्रो वृद्धः क्षीणोऽथवातुरः ।
पादत्रयस्यसम्यक्तया सतु जीवेत कदाचनः ॥ १ ॥

अर्थात्–पसीना अधिक निकले, तीव्र वेग से ज्वर आवे, रोगी वृद्ध अथवा क्षीण होवे। चिकित्सा के तीनों पदों (वैद्य. परिचारक, औषधि) के ठीक होने से रोगी कभी २ अच्छा हो जाता है।

तात्पर्य–असल में इस रोग मे फुफ्फुस खराव हो जाता है और वहुधा सड़ भी जाता है। इस दशा मे किसी कदर, लाल, मैला और पतला कफ निकलता है। फुफ्फुस के सड़ जाने

पर घोर बदबूदार पीप के जैसा बलगम निकलता है। ऐसे फुफ्फुस के खराब हो जाने पर रोग कष्ट साध्य हो जाता है अथवा फुफ्फुसों में दाह और जलन हो तो भी रोग कष्टसाध्य समझना चाहिये। अगर यह रोग छोटे बालक, बूढ़े, स्त्री (खास कर गर्भवती औरत) या व्याधी को हो जाय तो कठिनता से ही आराम होता है।

असाध्य (अरिष्ट) लक्षण--

द्वावेव फुफ्फुसौ दुष्टौ समग्रोयस्य देहकः।
नासाश्वासो भृशं स्वेदो दुर्लभं तस्य जीवितम् ॥१॥
मन्दकिञ्चित् प्रलपति स्वेदस्नात प्रमुह्यति।
वेपते करपादश्च प्राणास्तस्यापि दुर्लभाः ॥२॥
अतिसारेण वाऽक्रान्तो दुर्वारेण भवेद्यदि।
क्षीण श्वसनकेनार्त्तो दक्षिणाभिमुखो हि स. ॥३॥

अर्थात्--दोनों फुफ्फुस दुष्ट हों, जिसका समस्त शरीर रोग के विकार से पूर्ण ग्रसित हो गया हो, नाक से श्वास अधिक चलती हो, अतिसार हो, पसीना ज्यादा निकलता हो, उसका जीना दुर्लभ है। थोड़ा बकके, पसीना से नहाय जाय, मोह को प्राप्त हो और हाथ पैर कांपते हो तो वह रोगी भी असाध्य है। यदि रोगी अतिसार से युक्त हो और वह अतिसार किसी विधि से निवारण न हो सके, दुर्बल हो और श्वास से अधिक पीड़ित हो, तो वह रोगी भी नहीं बच सकता है।

तात्पर्य-यदि मल और वातादि दोष विरुद्ध हों, अग्नि नष्ट हो जाय, और सब लक्षण सम्पूर्ण रूप से प्रकट होजायं तो असाध्य जानना, और-यदि दिन पर दिन निद्रानाश, हृदय की अरुचि मन मे अस्थिरता और बल हानि आदि लक्षण प्रकाशित हों तो उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर ही रोगी की मृत्यु अवश्य होजाती है।

पथ्यापथ्य-

इस रोग में भोजन बिल्कुल तरल (पतला) देना चाहिये। दूध, साबूदाना, मुर्गी के अण्डे की सफेदी दे, और कोष्ठ बद्धता दूर करनी चाहिये। रोगी को साफ खुली हवा में रखे, पीने के लिये उष्ण जल अथवा औटाया हुआ जल शीतल करके दें। परन्तु जब तक इस रोग के लक्षण शान्त न होजायं और शरीर मे लघुता न आजाय तब तक इसमे कोई गुरु (भारी) पदार्थ कदापि न देना चाहिये।

चिकित्सक को चाहिये कि सबसे प्रथम रोगी को २-३ दिन लंघन कराकर दूध का पथ्य देने की व्यवस्था करे। लंघन के समय पाचन और दोषों को शमन करने वाली औषधि का प्रयोग भी साथ मे करते रहे। रोगी को साफ कमरे मे जहां बहुत मनुष्यों की भीड़ न होती हो, और पवित्र वायु का संचार होता रहता हो, रखना चाहिये। जहां तक हो सके तेज रोशनी रोगी के कमरे मे न करे। तिल तैल का दीपक या मोमबत्ती जलाना चाहिये।

रोगी के शरीर में उष्ण वस्त्र सदा पहिनाये रखे। जिससे सर्दी शरीर को कोई हानि न पहुंचा सके। रोगी को थकावट न आने देना चाहिए, क्योंकि साधारण परिश्रम से दुर्बल रोगियों को बहुत हानि पहुंचती है। उसके श्वास का वेग बढ़ता है और जीवनीय शक्ति कम हो जाती है। जहां तक हो सके रोगी को मलमूत्र भी खाट पर ही या निकट ही कराना चाहिए और पथ्यादि भी वहीं लाकर देना चाहिए।

अनुभूत चिकित्सा—

वायु—

बिल्कुल शुद्ध पहुंचनी चाहिए, क्योंकि जब निमोनिया रोगी को शुद्ध वायु नहीं मिलती है, तब उसका श्वास कष्ट विशेष बढ़ जाता है।

स्थान—

रोगी को ऐसे कमरे में रक्खे कि जहां पर न तो मनुष्यों की भीड़ हो और न धुवां वगैरह: जहरीली वायु का प्रवेश हो सके यानी, शुद्ध वायु और प्रकाश का संचार बराबर होता रहे। कमरे में सर्दी का नामो-निशान तक न हो, रोशनी का प्रबन्ध तेज नहीं हो, इसके लिए तिल तैल या मोमबत्तियां उत्तम होती हैं। मलमूत्र का स्थान उसी में या पास ही रहना चाहिए ताकि रोगी को उठने बैठने में अधिक कष्ट न हो, परन्तु अति शीघ्र उसे बराबर साफ करते जाना चाहिये। स्थान किसी भी प्रकार दुर्गंधित न हो।

वस्त्र–

रोगी के वस्त्र-बिछावन और ओढ़ने के मुलायम तथा निहायत ही साफ होने चाहिए। इसके लिए ऊनी वस्त्र अच्छे होते हैं। रोगी को गले से नीचे छाती तक या पेट तक साफ मुलायम ऊनी–वस्त्र (स्वेटर) पहना देना चाहिए, जिससे छाती और पेट में ठण्डी हवा न लग सके। मुखमण्डल खुला रहे, कान और गर्दन कुछ छिपे रहें तो कोई हर्ज नहीं।

दुग्ध [और उसका विधान]—

दुग्ध	१ सेर,	पानी	१ सेर
बीज रहित मुनक्का			२० नग
अदरख			३ माशा

—इन सबको कढ़ाई मे डाल मन्दाग्नि से पचावें, जब केवल दुग्ध मात्र शेष रहे, तब उतार कर छानले। ठण्डा होने पर उसका बलानुसार उचित मात्रा से प्रयोग करें।

जल

पीने के लिये जल अर्धावशिष्ट औटा हुआ, साफ कपड़े से छना हुआ दें। किंचित् सुखुम २ (गुनगुना) जल पीना उत्तम है। यही नहीं किन्तु सर्दी से लेकर निमोनियां पर्यन्त हर दशा मे उष्ण जल पीना परम लाभदायक है। इससे कफ-वायु के स्रोत शुद्ध होते है और अग्नि दीप्त होती है।

लंघन

निमोनिया ज्वर में जब तक क्षुधा मन्द, दोषों की अधिकता ज्वर का अधिक उत्ताप, गुरुता, तन्द्रा, मलबद्धता, शरीर, नेत्र तथा पेट का भारीपन, अधोवायु की रुकावट और शरीर का जकड़ाव हो तथा तीव्र क्षुधा, मन, इन्द्रिय की प्रसन्नता और शरीर का हलकापन न हो, तब तक उपवास करना ही श्रेष्ठ है। तीव्र भूख होने पर साबूदाना वगैरह: हलका पथ्य देने से हानि नहीं होती। किन्तु अल्प क्षुधा मे, रोग वृद्धि के समय, हल्का पथ्य भी हानि करते देखा गया है। इस लिये जब तक रोगी प्रसन्ने-न्द्रिय न हो, दोषों की सम अवस्था दूर न हो तब तक लघु पथ्य भी नही देना चाहिये। ऐसी अवस्था मे वैद्य को उपवास से डरना नहीं चाहिये। कारण—"कफपित्ते द्रवे धातू सहेते लंघनं महत्" इत्यादि वचनों को याद रखना चाहिये। यदि रोगी अत्यन्त दुर्बल हो और अनिष्ट होने की आशङ्का हो तो भले ही थोड़ा उष्ण दूध मुनक्का औटाया हुआ देना चाहिये। यदि दस्त पतले हों तो मुनक्का न देवे, किञ्चित बिल्व गिरी, सोंठ या पीपल डाल कर औटाया हुआ दूध देना चाहिये।

परिचारक को कुछ सूचनायें

१—रोगी के हाथ पैर मैले हो जावे, तो गर्म जल या साबुन से साफ कर लेना चाहिये।

२—नख यदि बढ़ गये हों तो उन्हे कटवा दे।

३—निमोनिया रोगी यदि कफ के स्निग्ध व चेपदार होने के कारण थूक न सके तो सेवक को चाहिये कि मुख में हाथ देकर रुई या कपड़े से कफ निकाल ले।

४—कफ को मिट्टी के (दिये हुये) पात्र में थूकना चाहिये, दीवारों पर या यत्रतत्र कदापि न थूके तथा वह (थूक—पात्र) पीकदान दिन में प्रातः मध्यान्ह और सायं नित्य अच्छी तरह से साफ करना जावे या नया बदलता जावे।

५—मालिश करने का क्रम – यह है कि पंजरास्थि, यानी पांजर की हड्डी जिस प्रकार से लगी हुई है, उसी प्रकार सीधे हाथ से मेरुदंड (रीढ) पर्य्यन्त मालिश करना चाहिये।

६-यदि ज्वर में १०३ तथा १०४ डिग्री के ऊपर शरीर का उत्ताप पाया जाय तो गर्मी के नाशार्थ मस्तक में लेप करने के लिये माथे के केश छोटे करवा दे या उस्तरे से कटवा दें।

७—रात्रि को लेप कदापि न लगावे, उस समय मालिश आदि की औषधियों का प्रयोग करे। लेप दिन में प्रातःसायं करावे। सायंकाल के पहिले पहले ही करा दे, पट्टी हर समय की बदल दें, पट्टी मुलायम रुई धर कर उस पर बांधें, अधिक कस कर पट्टी बांध देने से श्वास क्रम बढ़ जाता है और रोगी को दुःख तथा हानि होती है।

उग्र लक्षणों की चिकित्सा

ज्वर तथा सिर दर्द की अधिकता में

इस रोग में ज्वर शांत होने की औषधि नहीं करनी चाहिये क्यों कि रोगी के हृदय की गति दुर्बल होती है। अतएव ज्वर शांत होने की औषधियों का उपयोग करने से हृदय अधिक निर्बल हो जाने की सम्भावना है; अर्थात् हार्ट फेल (Heart fail) होकर मर जाने का डर है।

८-केवल जल में भीगा कपड़ा सर पर रक्खें।

९-शोरे के पानी में भीगा कपड़ा सिर पर रक्खे।

१०-नौसादर के पानी से भीगा कपड़ा सर पर रक्खे।

१०-दशांग लेप ५ तोला को सिल पर पीस कर उसको कपड़े पर लगा कर सिर पर रक्खे।

दशांग लेप

सिरस की छाल, मुलैहठी, तगर लाल चन्दन
इलाइची, जटामांसी, हल्दी दारुहल्दी
कूठ नेत्रवाला —यह सब सम भाग ले।

जल में पीस पांचवां हिस्सा घृत में मिला कर लेप करे।

१२-शोरा और अतीस की २-२ रत्ती की पुड़िया २-२ घंटा बाद गरम पानी से दें, यह मूत्रल और कफ निस्सारक है।

मूर्छा, तृषा, अनिद्रा आदि उपद्रवों पर—

१३–मस्तक के बालों को कटवा कर पुराने गौ घृत की मालिश करावे,

१४–ललाट पर बकरी का दूध थोड़ा २ देते रहें या इकहरे कपड़े की पट्टी–उक्त दूध में तर करके ललाट पर रक्खे।

१५–बर्फ की टोपी सिर पर रखनी चाहिये।

१६–जल में कपूर मिला कर, मस्तक पर पट्टी दें।

१७–ईख का सिरका लेकर जल मिला कर मस्तक पर पट्टी दे।

१८–त्रिफलादि घृत या ब्राह्मी घृत की मस्तक पर मालिश करें।

त्रिफलादि घृत—

त्रिफला का रस — ६४ तोले

अर्थात्–हर्र, बहेड़ा, आमला (२० २० तोले) को अठगुने (२ सेर) पानी में औटावे, जब चतुर्थांश रहे, तब नीचे उतार कर छान लें–इसे रस या स्वरस कहते है) इसी प्रकार–

बांसा का रस	६४ तोले
भांगरा का रस	६४ तोले
बकरी का दूध	६४ तोले
घृत	६४ तोले ले। फिर—

त्रिफला,	पीपल,	दाख,	चन्दन,
सेंधा नमक,	खरैटी,	काकोली,	क्षीर काकोली,
मेदा,	मिर्च	सौंठ	शक्कर

श्वेत कमल, साठी, हल्दी, दारुहल्दी मुलैहठी —ये उन्नीसों १-१ तोला लें। इनका कल्क बना उपरोक्त सब चीजों को तथा इस कल्क को भी कढ़ाई मे डाल कर घृत-पाक विधि से सिद्ध करके (घी मात्र शेष रहने पर) उतारले, छान कर बोतलों मे भर ले।

ब्राह्मी घृत

ब्राह्मी स्वरस	२५६ तोला
गौघृत	६४ तोला

हल्दी, मालती, कूट, निशोथ, पीपल, बायविडङ्ग, सैंधानमक, शक्कर वचमीठी —ये सब १-१ तोले ले।

—घृत पाक विधि से (मद अग्नि पर पकावे) सिद्ध करके घी मात्र रहने पर रखले। यही ब्राह्मी घृत है।

पार्श्व वेदना पर

१६—यदि पार्श्वशूल अधिकता से हो तो फस्त (रक्त मोक्षण) करादे वा वेदना स्थान पर ७-८ जलौका (जौंक) लगवा दे।

२०—तारपीन का तेल १ तोला, कपूर ६ माशा पिपरमेंट ७ माशा, अजवाइन का सत्त ६ माशा

—सब से चौगुने नारायण तैल मे मिला कर छाती पर मालिश करें और ऊपर से आक के पत्ते सेक कर बांध दे। उसके ऊपर गरम ईंट या घड़े के खोपड़े का सेक करे।

२१-वक्षःस्थल पर पुराना घृत लगाकर खूब सेक करदे। बाद को ऊनी कपड़ा सेक कर बांध दें।

२२-अलसी की पुल्टिस भी बांधनी चाहिये।

२३-भड़भूंजे के यहां की वालू मे ईख का सिरका मिला कर स्वच्छ कपड़े मे वांधे, आग पर तवा रख वारम्बार पोटली को गर्म कर छाती मे जिस स्थान पर वेदना हो, सोहाता २ सेकें।

२४-सरसों का तेल आग पर गर्म कर उसमे २ रत्ती अहिफेन (अफीम) मिला मालिश करे।

२५-वारहसिंगी का शृङ्ग पत्थर पर, पानी मे चन्दन की भांति घिस कर, गर्म करके, दर्द वाले स्थान पर लेप करे।

२६-अफीम, हींग, गेरू, सौंठ चारों समान भाग लेकर ईख के सिरका मे पीस गर्म कर पार्श्व या छाती अर्थात जिस स्थान पर दर्द होता हो वहा लेप करें। एरड के पत्ते गर्म करके लेप किये हुए स्थान पर रख ऊपर से पट्टी बांधदे। पट्टी अधिक न कस दी जाय, जिससे रोगी को श्वास लेने मे कष्ट हो।

२-एक छटांक सरेस पानी मे घोल, आग पर गर्म करके, दर्द होने वाले स्थान पर लेप करे ऊपर से बारीक कागज चिपका कर धुनी हुई रुई का फाहा रखकर पट्टी बांधदें, दर्द शीघ्र ही शात होजायगा।

२८-बादाम का तेल, ईसबगोल का तेल १-१ तोला
ईसबगोल अलसी ६ ६ माशा

—इनमे से प्रथम ईसबगोल और अलसी को महीन पीस ले, पुनः तेल मे मिला कर गर्म करे। फिर पार्श्व या छाती जहां पर पीड़ा होती हो, लेप करे तो तुरन्त पीड़ा शांत होती है

२६—एरंड तैल गर्म कर मालिश करे, फिर एरंड पत्र पर एरंड तैल लगा गर्म कर ऊपर बांध दे।

३०—तारपीन का तेल गरम कर मालिश करे।

इन प्रयोगों के करने से कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है और फेफड़े स्वस्थ होजाते है, तभी लाभ प्रतीत होता है।

कास पर—

३१—"रसेन्द्रसार संग्रह" के कासाधिकार मे वर्णित "चन्द्रामृत" के प्रयोग से कास बिल्कुल नष्ट होजाती है।

३२—यदि कफ न निकले तो पांचों लवण, नवसादर, फिटकरी सुहागा को आक के दुग्ध मे भावना देकर फूंकले। इस की २ ? रत्ती की मात्रा बांसावलेह के साथ प्रयोग करने से कफ निकलने लगता है।

३३—सितोफलादि चूर्ण या च्यवनप्राश भी अच्छा काम करता है।

३४—सौंफ, मुनक्का, लिसोढ़ा का क्वाथ दिया जाय तो कफ पतला होकर बाहर निकल जाता और कास नष्ट होजाती है।

३५—काकड़ासिंगी, कायफल, पुष्करमूल, छोटी पीपल सम भाग लेकर महीन पीस ३ माशे चूर्ण, शहद ६ माशे मे चटावे, तो

इससे कफ पतला होकर निकलने लगेगा और श्वास, कास, ज्वर आदि उपद्रव शीघ्र शांत होंगे।

कहा है:-दो कक्कों को पकड़ कर, दो पप्पों से मेल।
मधु मे मेल मिलाय कर, पांचों कास ढकेल॥

अर्थात्-कर्कट श्रङ्गी, कायफल, पीपल, पुष्करमूल।
चूर्ण मिला मधु लीजिये, हरे कास दुख शूल॥

३६-वंशलोचन, श्वेत इलायची के बीज, मुलैठी, मुनक्का, सत्त गिलोय इन सबको समभाग ले महीन पीस उचित मात्रा में शहद के साथ चटावें तो-कफ पतला होकर निकल जावेगा।

३७-द्राक्षावलेह भी लाभप्रद है।

श्वास कष्ट पर—

३८—उत्तम चन्द्रोदय, विजयाचूर्ण, केशर, नौसादर चारों २-२ रत्ती। इनकी ४ मात्रायें बनाकर यथोचित शहद से उपयोग करें।

३९-महा श्वासकुठार रस, कायफल के अवलेह से काम में लावें।

४०-शृङ्गादि चूर्ण विशेष लाभप्रद है, यह गरीब बंधुओं के लिये सोने में सुगन्ध ही है।

४१-शृङ्गादि क्वाथ, कफकेतुरस, केशर वटी, स्वल्प कस्तूरी भैरव रस इनका प्रयोग भी अत्यन्त हितकर है।

अजीर्ण-आध्मान और मलावरोध पर—

प्रायः सभी रोग अन्तड़ियों में दूषित मल का संचित होने से ही होते हैं। इसलिये इस रोग के आरम्भ मे ही वस्ति प्रयोग द्वारा मलाशय को धोकर साफ कर लेना चाहिये। यदि किसी अवस्था मे नाभि के चारों ओर दर्द, मलावरोध, भारीपन आदि मालूम हो, तो अनिद्रा हो लवण मिश्रित वस्ति का उपयोग करना ही अच्छा है।

वस्ति कर्म का योग—

४२—१ सेर पानी में ३० नग गेहूं के दाने के समान नमक मिला, गरम कर वस्ति प्रयोग करे।

४३—वज्रक्षार चूर्ण—गरम जल के साथ ले।

४४—शंखादि चूर्ण का सेवन भी हितकर है।

४५—घोड़ाचोली रस (अभ्रकंचुकी रस) की २ गोली गरम जल या सौंफ के अर्क से प्रयोग करें।

अतिसार में—

४६—गंगाधर रस दशमूल क्वाथ से प्रयोग करें।

४७—यदि दूध से दस्त आते हो तो दूध मे आधा [सिर्फ अष्टमांश-सं.] चूने का पानी मिला कर गरम कर, काम मे लावे।

दाह तृषा और वमन के लिये—

४८—हिमांशु रस का प्रयोग करे तो तत्क्षण लाभ हो।

हिमांशु रस–

४ तोले सिरके को इतनी ही मिश्री डालकर खरल करें, जब मिल जावे, तब कपड़ छान करले और उसमे—

१ तोला पिपरमेंट, ६ माशा चन्दन और–
नेत्रबाला, मोथा, बालछड़, छोटी इलायची–सब ३-३ माशे;
कहरवा, संग जराहत, वंशलोचन, गेरू, मोती सीप भस्म ६-६ माशे। डालकर अर्क बेद मुश्क और गुलाब जल में खरल कर शीशी मे रखले। मात्रा–१॥ माशे से २ माशे तक।
अनुपान–इमली के पने मे मीठा मिला कर देना।

४६–वमन के लिये केवल राई का पलस्तर जिसमें कपूर मिला हो छाती पर लगाना लाभदायक है।

प्रलाप के लिये--

जिसमे बेहोशी अधिकता से हो, दशमूल १ तोला, ब्राह्मी ३ माशा, शंखपुष्पी ६ माशे के क्वाथ के साथ १ रत्ती–चन्द्रोदय दे और जहां तक हो सके रोगी से बात-चीत न करे–

मूत्रावरोध के लिये--

१ गोली चन्द्रप्रभा वटी ६ रत्ती शोरे के पानी से दे।

पतनावस्था--

[नाड़ी और हृदय की दुर्बलता तथा अकस्मात् स्वेद वाली खराब हालत पर]

५०–करतूरी ५ रत्ती, चन्द्रोदय ५ रत्ती, इन दोनों को मिलाकर ५ मात्रा बनाले और १ -मात्रा-२ तोले किसी भी सुरा के साथ प्रयोग करे। मृतसंजीवनी सुरा के साथ प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होते देखा गया है।

५१–कुचला ३ रत्ती, हींग ३ रत्ती, करतूरी ३ रत्ती, इनकी ६ मात्रा बनाकर सुरा से प्रयोग करे।

५२–करतूरी २ रत्ती, कपूर २ रत्ती, कुचला २ रत्ती इनकी ६ मात्रा बनाकर, यथा समय मधु से चटाकर, ऊपर सुरा पिलावे।

५३–मल्लसिन्दूर १ रत्ती, मृत संजीवनी सुरा के साथ प्रयोग करे या द्राक्षारिष्ट के साथ दे।

५४–वसंत तिलक रस १ रत्ती, दशमूलासव से प्रयोग करे।

५५–विष मुष्टि आसव की ८-८ बूंदे २॥-२॥ घंटे के अन्तर से प्रयोग करे। मैं इसको जटिल नाड़ी मन्द होने वाली अवस्था में मल्ल सिन्दूर के साथ प्रयोग कराकर लाभ पाता रहा हूं।

विष मुष्टि आसव का योग–

कुचिला ३ तोला, चिरायता १ तोला, मोथा १ तोला, गिलोय १ तोला, मुनक्का ४ तोला, जायफल ६ माशा दालचीनी ३ माशा, लौंग ६ माशा, दपार ६ माशा, दोनों अजवायन ६ माशा, दोनों जीरे ६ माशा काकड़ासिंगी १ माशा, गुड़ ३० तोला, पानी २ सेर

कांच के वर्तन मे भर मुख बन्द कर १ मास रखा रहने दे। फिर छान कर बोतलों मे भर कर प्रयोग में लावें।

५६—इस रोग मे विशेष ध्यान हृदय की निर्वलता का रखना उचित है। यदि हृदय अधिक निर्वल है तो चन्द्रोदय, स्वर्ण सिंदूर या वसंत मालती पान मे रख कर दे।

मल्लसिन्दूर, ताल सिंदूर, वंसत तिलक रस, चन्द्रामृत रस, मकरध्वज, श्वासकुठार रस, श्वासशार्दूल वटी, कल्पतरु रस, कफकेतु रस, कफ कुञ्जर रस और लक्ष्मी विलास आदि रस उचित अनुपान से देना भी लाभदायक है।

रोगान्त की दुर्बलता निवारणार्थ

च्यवनप्राश अवलेह, श्रृङ्गाराभ्र रस, वसंत तिलक रस, वसन्तमालती, मकरध्वज रस, केशरवटी, नवजीवन रसायन, धातु संजीवनीवटी आदि औषधि उत्तम है।

नोट—जिन २ योगों का ऊपर वर्णन कर आये है। वे योग रसेन्द्र सार, भैषज्यरत्नावली, शार्ङ्गधर, चरकसंहिता आदि ग्रन्थों मे वर्णित है। पाठकगण कृपया उनसे देखकर बना सकते है।

अवस्थानुसार व्यवस्था

निमोनिया की प्रथमावस्था—

जब ज्वर भाव सर्दी ग्लानि, जकड़ापन, दर्द आदि लक्षण हों, तो छाती पर उपरोक्त लेप कर पट्टी बांधे या—

५७—निमोनिया हर उत्तम प्रयोग—

तारपीन का तेल ३० बूंद कडुवा तेल २ तोला,
अफीम ३ रत्ती, कपूर, चूना, नवसादर १-१ रत्ती

इनको महीन पीसकर जरा कुसुम २ गरम छाती में मालिश करे और रुई से मन्द २ सेके, इससे खांसी का वेग कम होजाता है।

५८—प्रत्येक औषधि के साथ कफ को पतला कर शीघ्र निकालने वाले सुहागा, जवाखार, नवसादर आदि २ द्रव्यों का उपयोग अवश्य करना चाहिये।

५८—इस अवस्था में—लक्ष्मी विलास रस १ वटी—पान के रस और मधु के साथ साथ ३-३ घण्टे पर दे।

५९—मृत्युञ्जय रस—अदरख स्वरस और मधु मे २-२ घण्टे पर दे।

६०—आनन्द भैरव रस—तुलसी के क्वाथ के संग दे।

६१—संजीवनी वटिका—अभयादि क्वाथ के साथ दे।

६२—सुदर्शन चूर्ण—क्रमशः दिन मे ४-५ मात्रा करके देने पर लाभ देखा गया है।

निमोनिया की द्वितीयावस्था—

पथ्य-मुनक्का से औटाया हुआ उपरोक्त दुग्ध दे।

इस अवस्था मे वत्सनाभ युक्त औषधि का कभी भी प्रयोग नहीं करना चाहिये और न अहिफेन या भङ्ग मिश्रित औषधि ही दे।

अति कठिन खांसी, छाती मे अत्यन्त दर्द, रक्त मिला हुआ गाढ़ा कफ निकलना, नाड़ीकी द्रुतगति, इत्यादि लक्षण हों तो—

६३—श्वेताभ्रक भस्म, दशमूल क्वाथ के प्रयोग करने से विशेष लाभ होते देखा गया है।

६४—चन्द्रोदय, महालक्ष्मी विलास रस, सहस्र पुटित लौह भस्म, इनमें से कोई भी औषधि अडूसा के रस के साथ मधु मिला कर २-२ घण्टे पर देने से विशेष लाभ होता है।

६५—इस अवस्था में विशुद्ध हरताल भस्म भी अत्यन्त प्रभावशाली है। वैद्य को चाहिये कि उचित अनुपान से और रोगी के बलानुसार इसका सेवन करावे। तथा—

छाती पर पहिले कही औषधियो की मालिश करे।

पथ्य-पूर्ववत् दुग्ध, द्राक्षा।

निमोनिया की तृतीयावस्था में—

जब बार २ खांसी आती हो छाती में सुई चोभने की सी पीड़ा हो, सांस लेते मे दर्द बढ़ना आदि लक्षण हों तो—

६५—चन्द्रामृत रस-पान के रस मे मधु मिला कर दे।

६६–वृहद् कस्तूरी भैरव रस अथवा कृष्णाभ्रक भस्म. मालती बसन्त, गुडूची के रस मे मधु सङ्ग प्रात' सायं देने से भी कफ पतला हो जाता है। और यदि––

६६–वर्ण मलिन, श्वास प्रश्वास मे कष्ट, कफाधिक्य, मूर्छा आदि असाध्य उपद्रव उपस्थित हों तो–

चन्द्रोदय १ रत्ती. अद्रक रस में मधु मिला कर देना चाहिए।

६७–ताल चन्द्रोदय, विप चन्द्रोदय, षड्गुण बलिजारित सिद्ध मकरध्वज, सहस्र पुटित अभ्रक भस्म, सहस्र पुटित लोह भस्म मल्लसिंदूर, समीर पन्नग रस, लक्ष्मी नारायण रस, कस्तूरी आदि आदि रस अनुपान-भेद से अथवा पान के रस और मधु के साथ देने चाहिये।

अचूक चिकित्सा

छाती के दर्द पर

६८ लेप–अफीम शुद्ध सोंठ का चूर्ण, कायफल का चूर्ण काकड़ा सेंगी का चूर्ण और पुष्कर मूल का चूर्ण ३–३ माशा। फुलाई हुई फिटकरी १ तोला भर ले। फिर इन सब चीजों को थोड़ा पानी देकर, सावर शृङ्ग से घोटे। यहां तक कि जितना महीन हो घोटे। फिर इस लेप को आक के पके हुए पीले पत्तों पर घी लगा के दोनों तरफ अग्नि पर सेक ले और पत्ते पर सुसुम २ लेप लगा दर्द स्थान पर चिपका दें। ऊपर से धुनी हुई रुई की हल्की पट्टी बांध दे। प्रात' काल और सायंकाल ३-४ वजे लेप

लगा कर पहिली पट्टी बदल दें। यदि दिन में दोनों समय पट्टी न बांध सके तो एक समय ही बांधे। ६६–अदरख का रस, आक के पीले पत्तों का रस और पुराना गाय का घी मिला सुसुम-सुसुम मालिश करे। ऊपर से अलसी की पुल्टिस बांध दें। याद रहे कि पट्टी हल्की बांधनी चाहिये, जिससे श्वास लेने में कष्ट न हो। इस लेप से छाती का जमा कफ पतला होकर निकलने लगता है और दर्द आराम हो जाता है। यदि किसी कारण लेप और पट्टी देने में विलम्ब हो तो–७०– घृत भर्जित प्याज को कूट कर थोड़ा नमक मिला मन्द सेकना चाहिये।

७१–उत्तम शराब	३० तोला,	कपूर,	५ तोला
तारपीन का तेल	१० तोला	अफीम	१ माशे
साबुन देशी	६ माशे	जीरा स्याह	२ तोला
और जायफल	४ तोला ले।		

–कूटने योग्य वस्तु को कूट पीसकर सबको एक बोतल में भरकर ७ दिन तक धूप में रक्खे। फिर छान करके बोतल में रखले।

सेवन–निमोनिया में दर्द के स्थान पर छाती पर लगा कर मले।

गुण–शिर, कण्ठ, छाती, पिंडली, नख से शिख तक के सभी दर्द दूर होकर निमोनियां में चैन पड़े।

१–पिपरमेंट और	२–कपूर	१।–१। तोला
३–तेल लौंग	४–तेल इलायची	५–तेल दालचीनी
६–तेल लोहबान	७–तेल यूकेलिप्टस	८–तेल जायफल

हर एक ३।।–३।। माशे

९-मोंम देशी असली २॥ तोला, १०-तेल वादाम ४ तोला
११-गाय का शुद्ध घी ४ तोला

बनाने की विधि—पहिले औषधियों को किसी शीशी मे डाल कर काग लगा धूप मे रखदे, जव पानी के समान तरल हो जावे तव तीसरी से आठवीं तक की औषधियां भी मिला दे और शीशी की डाट लगा कर फिर धूप मे रख दे। और किसी चीनी या कलईदार पात्र मे गाय का घी डाल कर आग पर रखदे। जब पकने लगे तब मोम भी उसी मे डाल दे। जब मोंम भी खूब गल जाय तो नीचे उतार कर फौरन वादाम का तेल और नं० १ से आठ तक की औषधियां जो कि शीशी मे है इसी घी मे मिला कर खूब हल करदें, फिर साफ कपड़े मे डाल कर दूसरे किसी कलई दार पात्र मे छान दे और ठण्डा होने पर शीशी मे भर कर कड़ी डाट लगा कर सुरक्षित रखले।

गुण—निमोनिया मे छाती, हंसली के दर्द को तत्काल दूर करता तथा शिर दर्द, चोट, मोच का दर्द और पट्ठो आदि के दर्द पर भी अत्यन्त गुणकारी है।

नोट-यह दवा केवल वाहर लगाने के काम मे ही आती है।

७२-एक छटांक वाहरसिंगे के सींग का टुकड़ा आग मे जलाकर, थूहर के दूध से रगड़ कर, गजपुट मे कपरौटी कर फूंक दे। वस इसी प्रकार ३ आंच दे। भस्म तैयार है। इसमे से २-२ रत्ती प्रातः और सायंकाल मिश्री और स्याह जीरे के साथ सेवन करने से निमोनिया मे अपूर्व लाभ दिखाती है।

७३-कुचिला १५ तोला, लौंग १५ तोला, हरमल १५ तोला पाताल यन्त्र से तैल खींच कर रखले। इसे पान पर रख थोड़ा फैला कर दर्द पर बांधने से कुछ उपाड़ सा होगा। दो बार बांधने से आरोग्य हो जायेगा तथा सादे पान मे ११ चावल तैल ३ वार खिलाना भी चाहिये।

खांसी और श्वास आदि में

७४-शृङ्गादि चूर्ण-

यह योग निमोनिया रोग मे विशेष लाभप्रद है। यद्यपि उपरोक्त वर्णित अनेकों उत्तम योग है मगर वह अमीरों के ही योग्य हैं। प्यारे गरीब वन्धु जो स्वर्ण घटित, कस्तूरी अभ्रकादि वहुमूल्य रसायन सेवन नहीं कर सकते है उनके लिये यह परम लाभप्रद है। यह फुप्फुस के श्लेष्मा को पतला कर के सावधानी पूर्वक वाहर निकाल रोगी को चङ्गा कर देता है।

काकड़ासिंगी सोंठ मिर्च पीपरी भारङ्गी
वड़ी हरड़ का छिलका आंवला सेंधा नमक सांभर नमक

कचलोना असली, सोंचर नमक, कण्टकारीमूल, पुष्करमूल असली जवाखार उत्तम, प्रत्येक १-१ तोला ले। कूट कपड़ छान कर शीशी मे रखले। मात्रा—१॥ माशे से २ माशे तक। अनुपान-गर्म जल समय-दिन मे ३ वार। गुण-फुफ्फुस के श्लेष्मा को पतला कर वाहर निकाल देता है। तथा बच्चों की कुकर खांसी को जड़ से खो देता है। नोट-औषधि ताजी व उत्तम होनी चाहिये।

७५ कफ की अधिकता पर

पीपल, वंशलोचन, काकड़ासिंगी, अतीस, कायफल और भारंगी —सातों का बारीक चूर्ण कर शहद मे चटावे।

७६—अभ्रक भस्म १ माशा, कांतिसार लौह भस्म १ माशा
छोटी पीपल वंशलोचन दोनों २-२ माशा

इन सबको मिला रखलें। पुनः ४ रत्ती औषधि ६ माशे शहद मे मिला कर प्रातः सायं चाटे।

७७ निमोनिया नाशक क्वाथ

कर्कोटक और रक्तष्ठीवी आदि चाहे जिस २ सन्निपात के लक्षण प्रगट होते हों, परन्तु यह क्वाथ निमोनियां की प्रत्येक दशा मे लाभप्रद सिद्ध हुआ है। योग—

काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हर्र, जीरा, पीपल, चिरायता, पित्त पापड़ा, देवदारु, छुड़वच, कूट, जवासा, कायफल, सोंठ, नागरमोथा, धनियां, कुटकी, इन्द्रजौ, पाढ़, रेणुका, गजपीपल चिर्राचिरा, पीपला मूल, चित्रक, इन्दायण, अमलतास, नीम, कचूर, वावची, वायविडङ्ग, हल्दी, अजवाइन और अजमोद सब समान भाग। इन ३३ दवाइयों का काथ-विधि से तैयार कर उसमे हींग और अदरक मिला कर पीने से तत्काल लाभ दिखाई देता है तथा ज्वर, तन्द्रा, प्रमेह, कान पीड़ा और १३ प्रकार के भयङ्कर सन्निपात, हिचकी, श्वास, खांसी और सब उपद्रव नाश होते हैं।

७८—उत्तम कृष्णाभ्रक भस्म, माणिक्य रस, धातु संजीवनी वटी ३-३ माशा और स्वर्णमाक्षिक भस्म १ माशा ले। चारो को महीन पीस १ रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त पान के रस मे ३-३ घण्टे के अन्तर से देना चाहिये।

गुण—इससे कफ पतला होकर बहुत सरलता से निकल जाता है और सम्पूर्ण उपद्रवो से युक्त निमोनिया आराम हो जाता है। निमोनिया की कैसी ही बिगड़ी हालत हो यह देने से शीघ्र फल दिखाई देता है,नाड़ी को बल देता है,कफादि दोषों को शांत करता है और नींद लाता है। निमोनिया की सर्वोत्तम औषधि है।

७९-धातु संजीवनी वटी--

स्वर्ण वर्क १ भाग, कस्तूरी २ भाग, चांदी वर्क ३ भाग, केशर ४ भाग, छोटी इलायची के बीज ५ भाग, जायफल ६ भाग, वंशलोचन ७ भाग, जावित्री ८ भाग। सबको बकरी के दूध मे घोटें। पुनः पान के रस मे घोटे। बाद में मूंग बराबर गोली बना सुखा कर शीशी मे रख ले। यही धातु संजीवनी वटी है।

८०— निमोनिया मे जब नाड़ी क्षीण हो तथा पसीना देकर ज्वर कम हो जाय अथवा दस्त ज्यादा होने से शीताङ्गादि उपद्रव हों तो "नवजीवन रसायन" की एक गोली पान मे रख कर दे।

नवजीवन रसायन-

शुद्ध उत्तम नया कुचला	कृष्णाभ्रक भस्म

स्वर्णघटित मकरध्वज उत्तम लोह भस्म
त्रिकुटा चूर्ण —पांचों समान भाग ले।

—इनको अद्रक रस मे घोट १ रत्ती प्रमाण गोली बनाले। बस इसका ही नाम "नवजीवन रसायन" है। इससे नाड़ी बलवान रहती है और वात कफ के सम्पूर्ण उपद्रव शान्त हो जाते है।

८१—निमोनिया आराम होने के बाद निर्बलता दूर करने के लिये अथवा कुछ २ खांसी वगैरह की विशेषता मे नीचे लिखी औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

उत्तम मृगशृङ्ग भस्म ३ माशे, कृष्णाभ्रक भस्म ३ माशे
उत्तम निरुत्थ ताम्रभस्म १॥ माशे,

—तीनों को खूब खरल कर शीशी मे भर ले।

मात्रा—१ या १॥ रत्ती भर अवस्थानुसार १ समय पान के रस मे अथवा अडूसा के रस मे देने से अतीव गुणदायक है।

८२—शुद्ध सिंगिया विष १ तोला, शुद्ध अमलतास गंधक २ तो०
शुद्ध मल्ल भस्म ६ माशे, शुद्ध ताम्रभस्म सहस्रपुटी ६ मा०
अभ्रक भस्म सहस्रपुटी ६ माशे अकरकरा १ तोला
जावित्री १ तोला, जायफल १ तोला, लवङ्ग १ तोला
सिद्ध मकरध्वज षड्गुण बलि जारित ६ माशे
शुद्ध कुचला ३ तोला, पीपल छोटी ३ तोले

विधि- सबको कूट कपड़ छान कर बंगला पान के रस की सात भावना दें, १-१ रत्ती भर की गोली बना शीशी मे रखले।

मात्रा—१ गोली या बलानुसार। अदरख के स्वरस मे सम भाग मधु मिला कर उसके साथ दे।

गुण—यह गोली निमोनिया पर हमारी सेकड़ों बार की परीक्षित हैं। अति शीघ्र रोग मुक्त करती है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जावें थोड़ी है क्योंकि हमने असाध्य हालत पर भी इसका प्रयोग किया तो इसने अति शीघ्र अपना चमत्कारिक गुण दिखा कर हमे यश प्राप्त कराया।

८३ केशर वटी—

उत्तम केशर, जायफल, जावित्री, लवङ्ग, पिपरांगा १-१ तोला उत्तम कस्तूरी, तालमाणिक्य भस्म ३ माशा ले।

—पान के रस में ३ दिन, फिर अदरख के रस मे ३ दिन खूब घोट कर १-१ रत्ती की गोली बनाले। मात्रा-१ से ४ गोली तक बलानुसार। अनुपान-पान का रस।

समय-आवश्यकतानुसार प्रातः सायं दे।

गुण-निमोनिया की असाध्यता मे अति श्रेष्ठ है।

८४ स्वल्प कस्तूरी भैरव रस—

शुद्ध सिंगरफ शुद्ध मीठा विष शुद्ध सोहागा
जावित्री जायफल काली मिर्च
पीपल असली कस्तूरी —सब समानभाग ले

—पानी मे खूब खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर शीशी मे भर कर रखले। निमोनियां अथवा अन्य सन्निपात मे भी इन गोलियों को बलानुसार अदरख के स्वरस मे देने से अतीव लाभ होता है।

कफ कुञ्जर रस

शंख भस्म, सोंठ, कालीमिर्च शुद्ध सोहागा –ये १–१ माशे और शुद्ध मीठा विष ५ माशे, –सबको अदरख के रस मे ३ बार खरल करे। १-१ रत्ती की गोलियां बनाले। इन गोलियों को बलानुसार अदरख के रस के साथ देने से कफ की वजह से रुका हुआ गला खुल जाता है और भयंकर निमोनियां मे भी यह अच्छा काम करता है।

और भी आवश्यकतानुसार--

निमोनियां की शास्त्रीय औषधियां

लक्ष्मी विलास रस, कांचनाभ्र रसायन, चन्द्रामृत रस, श्वास कुठार रस, श्वास चिन्तामणि रस, सोमनाथ ताम्र, बृहत कस्तूरी भैरव रस, कल्पतरु रस, अग्नि रस, अष्टादशांग क्वाथ, शृंग्यादि क्वाथ, भार्गीगुड़, वांसावलेह आदि २ उत्तम औषधियां हैं— जिन्हें पाठक-गण शार्ङ्गधर संहिता, भैषज्य, रत्नावली चरक संहिता, रसेन्द्रसार संग्रह आदि-आदि ग्रन्थों को देख कर निर्मित कर सकते है। जो ऊपरी निर्माण की हुई थीं वे यथा-स्थान अंकित कर दी गई है।

डाक्टरी चिकित्सा—

इसमें अनेक दवायें देते हैं परन्तु उत्तम दवा 'काडलिवर ऑयल' है। रोग मिट जाने की दशा में इसका देना हितकर है।

८६—'काडलीवर ऑयल' को १ ड्राम से लेकर १ औंस तक दूध के साथ दें।

८७—पहिले पहल चिरायते का काढ़ा या "टिंचर स्टील" देना अच्छा है।

८८—कफ को पतला करने के लिए पोटास आइयोडाइड बलानुसार दें।

८९—कफ को निकालने के लिये-"इपिकाकुआना" उचित मात्रा में दें।

९०—कफ को दूर करने के लिये उचित मात्रा में—
टिंचर इपीकाक Tr. Ipecaucuhana
टिंचर डिजीटेलिस Tr. Digitelis.
कैफीन साइट्रास Caffiene Citras.

'सत कुचिला" [ऐकसट्रैकट नक्स वोमिका या "स्ट्रिनाइन" Ext. Nux Vomica या Strychnine] दें।

'ऐमोनियम कार्ब' भी कफ को दूर करने में दिया जाता है।

९१—अत्यन्त दुर्बलता में—ब्रांडी शराब का उपयोग करते हैं। और

९२-"मार्फिया,,-का इन्जैक्शन भी करते है। इससे पीड़ा शान्त होती है।

९३--निमोनिया मे इन्जैक्शन--
कपूर का तेल १५ बूंद मसल्स [मांसपेशी] में नित्य १ बार दिया जाता है और वह अच्छा लाभ करता है।

औषधि वनाने की विधि--शुद्ध जैतून का तेल २० बूंद लेकर किसी कांच की नली मे देकर धीमी आंच [स्प्रिट लैम्प] पर रख दे। जव गर्म हो जाय तव शुद्ध कपूर ४ रत्ती उसमे दे दे। जव कपूर गलकर मिल जाय, तव ठंडा करके सुई द्वारा औषधि का प्रयोग करें। यह औषधि निमोनिया, वात वेदना, शीतांग, हैजा और प्लेग मे भी प्रयोग की जाती है, तथा सन्तोषजनक लाभ भी दिखाई देता है।

प्रलाप, मूर्च्छा, तृषा, अनिद्रा आदि उपद्रवों पर-

९४-कपूरजल, लेवेंडर वाटर [Lavender water] ओडी कोलन [Eau-decologne] इनमें से किसी एक मे जल मिला कर मस्तक पर पट्टी देने से सन्तोष जनक लाभ होता है। या वर्फ की टोपी देने से भी फायदा होता है।

छाती के दर्द पर-

एंटीफ्लोजिस्टीन [Anti-phlogistin] वा थर्माफ्युज [Thermafuse] आदि औषधियों का लेप चढ़ाया करते है- और लाभ भी उत्तम होता है। इनका मूल्य कुछ अधिक है।

ऐंटी फ्लोजिस्टिन लेप की विधि—

[अङ्गीठी या स्टोव पर एक पात्र में जल को गरम करें। उस जल में एन्टीफ्लोजिस्टिन का डिब्बा खोल कर रखदें। जल डिब्बे से कुछ नीचा ही रहे उसके अन्दर न जाने पावे। दवा गरम होकर पतली हो जायगी। तब एक फलालैन का टुकड़ा छाती की बीच की हड्डी से, पीठ के बीच की हड्डी तक का नापकर काट ले। दोनों फेफड़े रोगाक्रांत हों तो समस्त छाती का घेरा बनाकर काट ले। उस कपड़े को तख्ने पर फैला कर उस पर चाकू या लकडी से—गरम एन्टिफ्लोजिस्टिन फैलादें। इतना मोटा पर्त जमावे कि वह २ जौ की मोटाई जितना मोटा हो। अब इस पलस्तर को गुनगुना ही छाती और पीठ पर चिपकावें-पर छाती के बीच की हड्डी [उरोस्थि] अवश्य खुली रहे जिससे श्वास में बाधक न हो। यह पलस्तर धीमा धीमा सेक और स्निग्धता पहुंचा कर फुफ्फुस का शोथ आराम करता है। २४ घण्टे बाद पलस्तर बदल दे। साधारणतः २-४ पलस्तर बदलने काफी होते है। यह औषधि विदेशी आती है। इसी प्रकार की उत्तम देशी औषधि—"ऐंटी कंजेस्टिन और 'अल्सीटिन' आती है। ये कोई भी न मिले तो—

१५—अलसी (तीसी)　　　　कपूर　　　　केशर

—पीस कर कुछ गरम करके लेप करें। ३-४ घन्टे के अन्तर से बदलते रहे। यह भी अत्युत्तम है।

पाश्चात्य चिकित्सा में हृदय को बल देने वाली, 'डिर्जीटे-लीस" उत्तम औषधि है। कोई २ चिकित्सक ऐसी हालत में ब्राडी देते है। कोई २ "स्ट्रिकनिया" प्रभृति उत्तेजक औषधियां भी देते है। और कोई "ओक्सीजन" सुंघाते है।

इसमे भी हृदय की निर्बलता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इससे डाक्टरी चिकित्सा जब कभी किसी रोगी की की जावे, तो उस निमोनिया मे जहां तक मिल सके अच्छे से अच्छे डाक्टर की ही चिकित्सा कराना चाहिये।

